नवसर्जन संस्कृति

PRGI No. UPHIN/25/A1698

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM LUCKNOW

वर्ष : 02
अंक : 026
दि. 26.05.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

हीटवेव के बीच बिजली सप्लाई में यूपी बना नंबर-1, पीक डिमांड की ऐतिहासिक सप्लाई 31804 एमडब्लू पूरी

(जीएनएस)।

उत्तर प्रदेश ने बिजली आपूर्ति के क्षेत्र में एक नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बना दिया है। ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने सोमवार (25 मई) को घोषणा की कि 24 मई रात 10:39 बजे राज्य में बिजली की पीक सप्लाई 31,804 मेगावाट तक पहुंच गई। यह न सिर्फ यूपी बल्कि पूरे देश के किसी भी राज्य द्वारा दर्ज की गई अब तक की सर्वाधिक बिजली आपूर्ति है।

ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा, 'यूपी लगातार अपने ही रिकॉर्ड तोड़ रहा है। हमारी प्रतिस्पर्धा अब केवल खुद से है।' इससे पहले रात 10:01 बजे 31,774 टह और सुबह 2:33 बजे 31,000 टह का आंकड़ा पार किया जा चुका था।

रिकॉर्ड की अहमियत

31,804 MW की यह पीक सप्लाई कई मायनों में ऐतिहासिक है:-

पिछले सभी रिकॉर्ड (जून 2025 का 31,486 MW) को पार कर गया।

प्रचंड गर्मी और बढ़ती मांग के बावजूद निर्बाध आपूर्ति बरकरार रही।

महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु जैसे बड़े राज्यों को पीछे छोड़ते हुए यूपी देश में नंबर-1 बन गया।

शहरी क्षेत्रों में 24 घंटे और ग्रामीण क्षेत्रों में 22 से 22.5 घंटे औसत बिजली उपलब्धता।

कैसे हासिल हुआ यह रिकॉर्ड?

सरकार की रणनीति

उत्तर प्रदेश सरकार ने बिजली क्षेत्र में पिछले 8-9 वर्षों में बड़े पैमाने पर सुधार किए हैं। प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार हैं:

1. उत्पादन क्षमता में भारी वृद्धि

2017 में यूपी की अपनी बिजली उत्पादन क्षमता मात्र 5,160 MW थी, जो अब बढ़कर 9,120 MW हो गई है। घाटमपुर थर्मल पावर प्लांट, जवाहरपुर, ओबरा और अन्य नई इकाइयों ने इस वृद्धि में अहम भूमिका निभाई।

2. ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क का आधुनिकीकरण

सबस्टेशन क्षमता 39,000 MVA से बढ़कर लगभग 2 लाख MVA हो गई (6 गुना वृद्धि)।

1.59 लाख किलोमीटर नई लाइन बिछाई गई।

29 लाख नए पोल लगाए गए और हजारों पुराने ट्रांसफार्मरों को अपग्रेड किया गया।

स्मार्ट मीटरिंग, एआई आधारित लोड मैनेजमेंट और रियल-टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम लागू।

3. नवीकरणीय ऊर्जा पर जोर

सोलर, बायोमास और छोटे हाइड्रो प्रोजेक्ट्स को बढ़ावा दिया गया। इससे ग्रिड पर दबाव कम हुआ और पर्यावरण अनुकूल ऊर्जा मिश्रण तैयार हुआ।

4. बिजली चोरी पर सख्ती

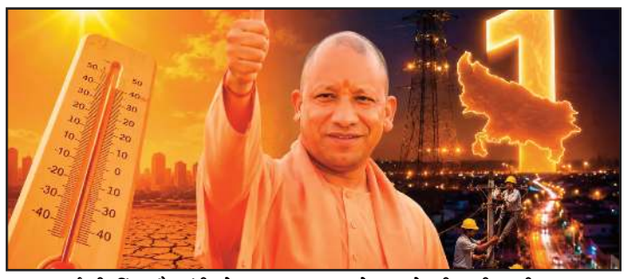

स्मार्ट मीटरिंग और एंटी-थेफ्ट ड्राइव से रेवेन्यू में उल्लेखनीय सुधार हुआ, जिससे नए प्रोजेक्ट्स के लिए संसाधन उपलब्ध हुए।

गर्मी की चुनौती और विभाग की तैयारियां

मई 2026 में यूपी में प्रचंड गर्मी पड़ी। कई जिलों में तापमान 46-48त्ब तक पहुंच गया। एयर कंडीशनर, कूलर और पंखों की खपत ने मांग को नई ऊंचाई दी। देश का कुल पीक डिमांड भी 270 ॠ के पार पहुंचा, जिसमें यूपी का हिस्सा सबसे बड़ा रहा।

ऊर्जा मंत्री अड शर्मा ने स्पष्ट किया कि बिजली कर्मचारी तकनीकी खराबी, मौसम संबंधी समस्या या किसी अन्य कारण से होने वाली स्थानीय रुकावटों को तुरंत ठीक करने के लिए दिन-रात काम कर रहे हैं। उन्होंने जनता से कर्मचारियों की मेहनत की सराहना करने और सहयोग करने की अपील की।

2017 वर्सेज 2026: सफर की तुलना

2017: औसत पीक डिमांड लगभग 13,000-14,000 टह, भारी लोडशेडिंग, घंटों बिजली कटौती।

2026: औसत पीक डिमांड 28,000-30,000 टह के आसपास, शहरी क्षेत्रों में 247 सप्लाई।

बिजली उपलब्धता दोगुनी से ज्यादा हो गई।

1.5 लाख से अधिक बिजलीविहीन गांवों और बस्तियों को रोशनी मिली।

यह बदलाव यूपी को बिजली क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

आर्थिक और सामाजिक प्रभाव

उद्योग जगत: निरंतर बिजली से फैक्टरियां बेहतर चल रही हैं। निवेश आकर्षित हो रहा है और टरटए सेक्टर को बढ़ावा मिल रहा है।

कृषि क्षेत्र: ट्यूबवेलों को समय पर बिजली मिलने से फसल उत्पादन बढ़ा है।

घरेलू उपभोक्ता: छात्रों की पढ़ाई, स्वास्थ्य सेवाएं और दैनिक जीवन सुगम हुआ।

रेवेन्यू: बेहतर कलेक्शन से विभाग वित्तीय रूप से मजबूत हुआ।

अभी भी चुनौतियां बाकी?

मांग हर साल 8-10% की दर से बढ़ रही है।

ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन लॉसेज को और कम करना।

ग्रामीण क्षेत्रों में 247 सप्लाई सुनिश्चित करना।

नवीकरणीय ऊर्जा को मुख्यधारा में लाना।

सरकार इन चुनौतियों का सामना करने के लिए और बड़े प्रोजेक्ट्स पर काम कर रही है।

मंत्री एके शर्मा का संदेश

ऊर्जा मंत्री ने बार-बार बिजली कर्मचारियों को 'हीरो' बताया। उन्होंने कहा, 'जहां स्थानीय समस्या हो, तुरंत सूचना दें। हम पूरे राज्य में सप्लाई बहाल और बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'

भविष्य की राह क्या है?

यूपी सरकार का लक्ष्य 2025-26 तक राज्य को पावर सरप्लस बनाने का है। बड़े सोलर पार्क, ग्रीन हाइड्रोजन और स्मार्ट ग्रिड पर भारी निवेश की योजना है। 31,804 टह का रिकॉर्ड सिर्फ एक आंकड़ा नहीं, बल्कि यूपी में बिजली क्रांति का जीवंत प्रमाण है। जहां एक समय अंधेरा छाया रहता था, वहां आज राज्य देश का पावरहाउस बन रहा है। यह उपलब्धि बिजली विभाग की मेहनत, सरकार की दूरदर्शिता और इंफ्रास्ट्रक्चर विकास का नतीजा है। यूपी अब बिजली के मामले में न सिर्फ आत्मनिर्भर हो रहा है, बल्कि पूरे देश के लिए उदाहरण पेश कर रहा है।

पद्म एवार्ड 2026: सम्मानित की गईं 66 हस्तियां, धर्मेंद्र को पद्म विभूषण-तेची गुबिन को पद्मश्री

(जीएनएस)।

राष्ट्रपति भवन में सोमवार (25 मई) को पद्म पुरस्कार 2026 का भव्य समारोह आयोजित हुआ। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 66 हस्तियों को पुरस्कार प्रदान किए। कुल 131 पुरस्कारों की घोषणा की गई है, जिनमें शेष 65 को दूसरे चरण में सम्मानित किया जाएगा।

इस साल की सूची में बॉलीवुड आइकन धर्मेंद्र (मरणोपरांत पद्म विभूषण), महिला क्रिकेट की स्टार हरमनप्रीत कौर, गायिका अलका याग्निक, मलयालम सुपरस्टार ममूटी, उद्योगपति उदय कोटक और कई अनसंग हीरोज शामिल हैं। समारोह में भावुक क्षण तब देखने को मिला जब हेमा मालिनी ने अपने पति धर्मेंद्र का पुरस्कार ग्रहण किया। हरमनप्रीत कौर को पद्म श्री मिलने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पैर छूने वाले सिलंबम खिलाड़ी के. पजनीवेल का वायरल वीडियो भी चर्चा में रहा।

पद्म पुरस्कार भारत की सॉफ्ट पावर, सांस्कृतिक विविधता और राष्ट्र निर्माण में योगदान को मान्यता देने का प्रमुख माध्यम हैं। 2026 की सूची को देखें तो यह समावेशी विकास, क्षेत्रीय संतुलन और सांस्कृतिक पुनरुत्थान का स्पष्ट संदेश देती है।

सरकार ने इस बार पूर्वोत्तर, आदिवासी क्षेत्रों, लोक कलाओं, खेल और वैज्ञानिक नवाचार पर खास ध्यान दिया। राजनीतिक रूप से देखें तो सूची में विभिन्न राज्यों, भाषाओं और सामाजिक वर्गों का प्रतिनिधित्व संतुलित है, जो केंद्र सरकार की "सबका साथ, सबका विकास" की विचारधारा को मजबूती प्रदान करता है। विपक्षी दलों ने कुछ नामों पर सवाल उठाए, लेकिन कुल मिलाकर सूची को व्यापक स्वीकार्यता मिली है।

नाम	सम्मान	क्षेत्र/राज्य	प्रोफाइल
1	धर्मेंद्र सिंह देओल	पद्म विभूषण	कला, महाराष्ट्र	बॉलीवुड के 'ही-मैन', 300+ फिल्मों में काम
2	डॉ. एन. राजम	पद्म विभूषण	कला, UP हिंदुस्तानी शास्त्रीय वायलिन वादक
3	डॉ. आर. गणेश	पद्म भूषण	कला, कर्नाटक	अवधान कला के बड़े विद्वान
4	भगत सिंह कोश्यारी	पद्म भूषण	लोक कार्य, उत्तराखंड	पूर्व उट और पूर्व राज्यपाल
5	उदय सुरेश कुमार कोटक	पद्म भूषण	व्यापार, महाराष्ट्र	कोटक बैंक के संस्थापक
6	प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा	पद्म भूषण	लोक कार्य, दिल्ली	वरिष्ठ राजनेता, खेल प्रशासक
7	डॉ. कैलिपट्टी रामासामी पलानीस्वामी	पद्म भूषण	मेडिसिन, तमिलनाडु	गैस्ट्रोएंटरोलॉजिस्ट
8	पीयूष पांडे	पद्म भूषण	कला, महाराष्ट्र	मशहूर विज्ञापन विशेषज्ञ
9	बिश्व बंधु	पद्म श्री	कला, बिहार	बिहार लोक नृत्य के कलाकार
10	भरत सिंह भारती	पद्म श्री	कला, बिहार	भोजपुरी लोक गायक
11	तगा राम भील	पद्म श्री	कला, राजस्थान	अलगोजा लोक संगीत के उस्ताद

12	हरमनप्रीत कौर भुल्लर	पद्म श्री	खेल, पंजाब	भारतीय महिला क्रिकेट कप्तान
13	रतिलाल मोहनलाल बोरिसागर	पद्म श्री	साहित्य, गुजरात	गुजराती हास्य लेखक
14	कुमार बोस	पद्म श्री	कला, पश्चिम बंगाल	बनारस घराने के तबला वादक
15	जनार्दन बापुराव बोथे	पद्म श्री	समाज सेवा, महाराष्ट्र	संत तुकड़ोजी महाराज से प्रेरित समाजसेवी
16	स्वामी ब्रह्मदेव	पद्म श्री	समाज सेवा, राजस्थान	दिव्यांग बच्चों के लिए काम
17	प्रोसेनजीत चटर्जी	पद्म श्री	कला, पश्चिम बंगाल	बंगाली सिनेमा के बड़े अभिनेता
18	देवकी अम्मा जी	पद्म श्री	समाज सेवा, केरल	3,000 पेड़ों का वन तैयार किया
19	डॉ. रामचंद्र गोडबोले व सुनीता गोडबोले	पद्म श्री	मेडिसिन, छत्तीसगढ़	आदिवासी स्वास्थ्य सेवा में योगदान
20	तोची गुबिन	पद्म श्री	समाज सेवा, अरुणाचल	न्यीशी संस्कृति और डोन्यी-पोलो परंपरा संरक्षण
21	डॉ. एच. वी. हांडे	पद्म श्री	मेडिसिन, तमिलनाडु	पूर्व स्वास्थ्य मंत्री, गरीबों की सेवा
22	गफारुद्दीन मेवाती जोगी	पद्म श्री	कला, राजस्थान	भपांग लोक वाद्य के कलाकार
23	मीर हाजी कासम	पद्म श्री	कला, गुजरात	ढोलक वादक, चैरिटी कार्यक्रम
24	रघुवीर खेड़कर	पद्म श्री	कला, महाराष्ट्र	तमाशा कलाकार
25	आर. कृष्णन किलना	पद्म श्री	कला, तमिलनाडु	आदिवासी Agilie Bothu पेंटिंग कलाकार
26	प्रो. लार्स-क्रिश्चियन कोच	पद्म श्री	कला, जर्मनी	एथ्नोम्यूजिकोलॉजिस्ट
27	प्रो. मामिडाला जगदीश कुमार	पद्म श्री	शिक्षा, दिल्ली	पूर्व UGC चेयरमैन
28	प्रवीण कुमार	पद्म श्री	खेल, वढ पैरालंपिक हाई जंप गोल्ड मेडलिस्ट
29	के. विजय कुमार	पद्म श्री	सिविल सेवा, तमिलनाडु	पूर्व कढर, वीरप्पन ऑपरेशन से जुड़े
30	श्रीरंग देवराव लाड	पद्म श्री	कृषि, महाराष्ट्र	हाई-यील्ड खेती तकनीक विकसित की
31	अंकेगौड़ा एम.	पद्म श्री	समाज सेवा, कर्नाटक	20 लाख किताबों की लाइब्रेरी बनाई
32	प्रो. सरोज मंडल	पद्म श्री	मेडिसिन, पश्चिम बंगाल	कार्डियोलॉजिस्ट
33	प्रो. बुद्ध रश्मि मणि	पद्म श्री	पुरातत्व, वढ अरक	के पूर्व DG
34	नीलेश विनोदचंद्र मंडलेवाला	पद्म श्री	समाज सेवा, गुजरात	अंगदान अभियान से जुड़े

भोजशाला में 750 साल बाद विधि-विधान से हुई पूजा

धार जिले में एक व्यापक विकास और जल संरक्षण अभियान के हिस्से के रूप में सरस्वती लोक विरासत और संस्कृति केंद्र और राजा भोज अनुसंधान संस्थान की स्थापना होगी। यह कदम राजा भोज जैसे ऐतिहासिक शख्सियतों को पहचान देता है और संस्कृति, साहित्य, पर्यटन और आदिवासी समुदायों के कपास उत्पादों सहित स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है। धार जिले में भोजशाला में करीब 750 वर्षों बाद पहली बार विधि-विधान के साथ मां वाग्देवी की पूजा-अर्चना की गई। सीएम डॉ. मोहन यादव ने स्वयं पूजा की और धारवासियों को बड़ी सौगात देते हुए यहां मां सरस्वती लोक और राजा भोज शोध संस्थान स्थापित करने की घोषणा की।

अभिषेक बनर्जी के घर अचानक पहुंची पुलिस! नोटिस के बाद बढ़ा सस्पेंस, क्या टीएमसी के अंदर शुरू हो गई 'इनर वॉर'?

(जीएनएस)।

पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक नया सियासी तूफान उठता दिख रहा है। अभिषेक बनर्जी के आधिकारिक आवास 'शांतिनिकेतन' पर सोमवार शाम अचानक भारी पुलिस फोर्स पहुंचने से राजनीतिक गलियारों में हलचल तेज हो गई। यह पूरा घटनाक्रम ऐसे समय सामने आया है, जब कुछ दिन पहले ही कोलकाता नगर निगम ने अभिषेक बनर्जी से जुड़ी 17 संपत्तियों को कथित अवैध निर्माण के आरोप में नोटिस भेजा था।

सबसे दिलचस्प बात यह रही कि पुलिस करीब एक घंटे तक घर के बाहर मौजूद रही, लेकिन न तो पुलिस अधिकारियों ने कोई बयान दिया और न ही तृणमूल कांग्रेस की तरफ से कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया आई। इससे पूरे मामले को लेकर सस्पेंस और गहरा गया।

कोलकाता नगर निगम यानी केएमसी ने हाल ही में अभिषेक बनर्जी से जुड़ी कई संपत्तियों को नोटिस जारी किया था। इन संपत्तियों में उनका

सरकारी आवास, उनके माता-पिता से जुड़े ठिकाने और उनकी कंपनी 'लीप्स एंड बाउंस' से संबंधित प्रॉपर्टी भी शामिल बताई जा रही हैं।

नगर निगम ने इन सभी मामलों में जवाब देने के लिए सात दिन की समयसीमा तय की थी। सोमवार को यह समयसीमा खत्म हो गई और उसी दिन पुलिस की मौजूदगी ने पूरे मामले को और ज्यादा संवेदनशील बना दिया। हालांकि अभी तक यह साफ नहीं हुआ है कि पुलिस वहां किस मकसद से पहुंची थी। लेकिन राजनीतिक हलकों में चर्चा यही है कि नोटिस का जवाब तय समय में नहीं मिलने के बाद यह गतिविधि बढ़ी।

सूत्रों के मुताबिक पुलिस जब वहां से लौटी तो अपने साथ एक मॉनिटर भी ले गई, जो इलाके के सुरक्षा कैमरों की निगरानी के लिए लगाया गया था। बताया जा रहा है कि अभिषेक बनर्जी की Z+ सुरक्षा हटाए जाने के बाद यह निगरानी सिस्टम भी हटाया जा रहा है। हालांकि इस पर भी कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। यही वजह है कि सोशल मीडिया और राजनीतिक गलियारों में कई तरह की अटकलें शुरू हो गई हैं।

रूस और ईरान से सस्ता तेल क्यों नहीं खरीद रही मोदी सरकार? आप मुखिया अरविंद केजरीवाल ने किया सवाल

(जीएनएस)।

आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने एक बार फिर भारत सरकार से अपील की है कि वह रूस और ईरान जैसे देशों से सस्ते कच्चे तेल और गैस की खरीद करे। उनका तर्क है कि ऐसा करके देशवासियों को पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस के मौजूदा संकट से राहत दिलाई जा सकती है, जिसके दाम लगातार बढ़ रहे हैं।

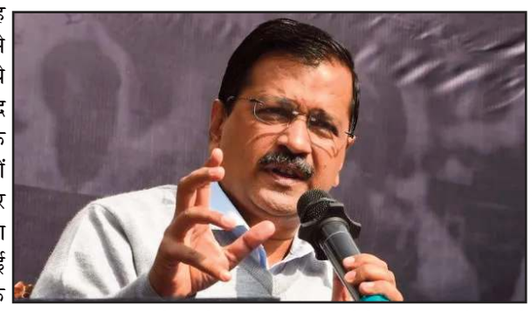

केजरीवाल ने रविवार को विशेष रूप से गुजरात के किसानों की स्थिति पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि किसानों को डीजल लेने में बहुत परेशानी हो रही है और पेट्रोल पंपों पर ट्रैक्टरों की लंबी-लंबी लाइनें लगी हैं। उन्होंने प्रश्न उठाया, "अगर देश के किसानों को डीजल नहीं मिलेगा तो वे खेती कैसे करेंगे?"

आप संयोजक ने मीडिया से बातचीत में दोहराया कि रूस और ईरान भारत को सस्ते दामों पर तेल और गैस उपलब्ध कराने के लिए तैयार हैं। हालांकि, उनके आरोपों के अनुसार, भारत सरकार इन सस्ते विकल्पों को चुनने के लिए तैयार नहीं है, जिससे देश में ईंधन की कीमतें आसमान छू रही हैं।

केजरीवाल ने यह भी बताया कि उन्होंने 'इंटरनेट मीडिया' पर पूरे देश, खासकर गुजरात में किसानों की डीजल के लिए हो रही तकलीफ को देखा है। उनका मानना है कि एक तरफ पेट्रोल और डीजल के अत्यधिक बढ़े हुए दाम और दूसरी तरफ सस्ते तेल की उपलब्धता के बावजूद उसे न खरीदना, देशवासियों के लिए एक अनुचित स्थिति पैदा कर रहा है।

डांसिंग बार आर्केस्ट्रा और स्पा के पीछे नाबालिगों के शोषण का गंदा खेल? सुप्रीम कोर्ट ने मांगा एक्शन प्लान, उठे ये बड़े सवाल

सुप्रीम कोर्ट ने देशभर में नाबालिग लड़कियों के शोषण को लेकर एक बार फिर सख्त रुख अपनाया है। ऑर्केस्ट्रा, डांस बार, नौटंकी ग्रुप, स्पा, मसाज पार्लर और सैलूनों में 18 वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को काम पर रखने और उनके यौन शोषण-तस्करी के आरोपों को 'अत्यंत गंभीर' मानते हुए कोर्ट ने केंद्र सरकार, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, विधि एवं न्याय मंत्रालय, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (NCPCR) और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC) को नोटिस जारी किया है।

'मम्मी देखी मेरी रेस,' 100 मीटर रिकॉर्ड के बाद गुरिंदरवीर का वह पहला कॉल, किस बात से पिता हुए भावुक?

(जीएनएस)।

पंजाब के जालंधर से निकले युवा धावक गुरिंदरवीर सिंह ने भारतीय एथलेटिक्स में नया इतिहास रच दिया है। रांची में आयोजित 29वें नेशनल सीनियर फेडरेशन कप में गुरिंदर वीर ने 100 मीटर दौड़ महज 10.09 सेकंड में पूरी कर नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। इस ऐतिहासिक प्रदर्शन के साथ उन्होंने न केवल देशभर में पंजाब का नाम रोशन किया, बल्कि कॉमनवेल्थ गेम्स के लिए भी क्वालीफाई कर लिया।

गुरिंदर वीर की इस उपलब्धि के बाद पूरे पंजाब, खासकर जालंधर में जश्न का माहौल है। रेस खत्म होते ही गुरिंदर ने सबसे पहला फोन अपनी मां गुरविंदर कौर को किया और भावुक होकर पूछा "मम्मी देखी मेरी रेस?" मां ने खुशी से जवाब दिया "हां बेटा, तूने कमाल कर दिया।" वहीं जब पिता कमलजीत सिंह से बात हुई तो गुरिंदर मुस्कुराते हुए बोले "डेडी दस्स फेर किदां?" बेटे की यह बात सुनकर परिवार भावुक हो गया।

करीब 90 वर्षीय दादी चरण कौर ने लड्डू खिलाकर पोते को आशीर्वाद दिया। घर के बाहर बधाई देने वालों की भीड़ लग गई। गुरिंदर के दादा तरसेम सिंह कबड्डी खिलाड़ी रह चुके हैं, जबकि पिता कमलजीत सिंह पंजाब पुलिस से एएसआई रिटायर होने के साथ-साथ वॉलीबॉल खिलाड़ी भी रहे हैं। परिवार की खेल पृष्ठभूमि ने ही गुरिंदर को बचपन से प्रेरणा दी।

मां की मेहनत और घर की डाइट बनी ताकत

गुरिंदर की मां गुरविंदर कौर ने बताया कि बेटे की डाइट का हमेशा खास ध्यान रखा गया। घर का शुद्ध घी, दूध, ड्राई फ्रूट, पिन्नियां, खजूर की बर्फी और प्रोटीन युक्त खाना उसकी ताकत बना। जब गुरिंदर 2014 में जालंधर ट्रेनिंग के लिए गया तो परिवार हर हफ्ते दो बार उसके लिए खास डाइट लेकर जाता था, ताकि शरीर को पर्याप्त पोषण मिल सके।

मां ने कहा कि गुरिंदर ने अपने शरीर को इस मुकाम तक पहुंचाने के लिए बहुत मेहनत की है। वह घर से दूर रहकर भी सिर्फ अपने लक्ष्य पर फोकस करता था।

टिकट होने के बाद भी 80 यात्रियों को टीटीई ने पकड़ा, जेब हो गई ढीली, ट्रेन से सफर करते आप भी ये गलती न कर बैठना

ट्रेन में सफर के दौरान टिकट होने के बाद भी 80 लोगों को टीटीई ने पकड़ लिया. इसके बाद इन सभी पर जुमार्ना लगाया गया. जिससे सफर का पूरा मजा किरकिरा हो गया. अगली बार आप भी ट्रेन में सफर करें तो भूलकर भी ये गलती न करें.

(जीएनएस)।

झांसी. ट्रेन में सफर के दौरान टिकट होने के बाद भी 80 लोगों को टीटीई ने पकड़ लिया. इसके बाद इन सभी पर जुमार्ना लगाया गया. जिससे सफर का पूरा मजा किरकिरा हो गया. अगली बार आप भी ट्रेन में सफर करें तो भूलकर भी ये गलती न करें. वरना आपका सफर भी खराब हो सकता है. भारतीय रेलवे इस तरह अभियान आगे भी चलाया रहेगा.

रेलवे के अनुसार उत्‍ तर मध्‍ य रेलवे ने 22 मई को झांसी मंडल के मुस्तरा रेलवे स्टेशन पर सघन मजिस्ट्रेट चेकिंग अभियान चलाया. अभियान का नेतृत्व सहायक मंडल वाणिज्य प्रबंधक वीरेंद्र सिंह और रेलवे

मजिस्ट्रेट प्रतीक त्रिपाठी ने किया. चेकिंग के दौरान कुल 265 यात्रियों को अनियमित यात्रा करते हुए पकड़ा गया. इनसे रेलवे ने कुल 1 लाख 56 हजार 955 रुपये का जुमार्ना वसूला. सबसे ज्यादा कार्रवाई बिना टिकट यात्रा करने वालों पर हुई. रेलवे अधिनियम की धारा 137 के तहत 185 यात्रियों को पकड़ा गया, जिनसे 1 लाख 30 हजार 40 रुपये वसूले गए.

वहीं, धारा 138 के तहत 80 यात्रियों पर कार्रवाई हुई. ये वे यात्री थे, जो जनरल टिकट लेकर स्लीपर या एसी कोच में सफर कर रहे थे या फिर स्लीपर टिकट लेकर एसी डिब्बों में यात्रा कर रहे थे. इन यात्रियों से 26 हजार 915 रुपये जुमार्ने के रूप में वसूले गए. इसलिए आप भी जब अगली बार ट्रेन में सफर करें तो ये गलती कतई न करें.

इस दौरान रेलवे ने लखनऊ इंटरसिटी एक्सप्रेस, यशवंतपुर–गोरखपुर एक्सप्रेस, वीरांगना लक्ष्मीबाई–कानपुर मेमू, गोरखपुर एक्सप्रेस और लोकमान्य तिलक टर्मिनस सुपरफास्ट एक्सप्रेस समेत कई ट्रेनों में जांच की. अभियान के दौरान कई यात्री कार्रवाई से बचने के लिए इधर–उधर छिपते भी नजर आए, लेकिन चेकिंग टीम ने सभी को पकड़ लिया. अभियान में 41 टिकट चेकिंग स्टाफ के अलावा आरपीएफ और जीआरपी के जवान भी मौजूद रहे. रेल प्रशासन ने यात्रियों से अपील की है कि वे हमेशा वैध टिकट और सही श्रेणी में ही यात्रा करें, जिससे जुमार्ने और कार्रवाई से बचा जा सके.

यूपी: 33 जिलों में लू के अलर्ट के साथ नौतपा शुरू, इन इलाकों में आंधी चलने की भी चेतावनी; ये शहर सबसे गर्म

(जीएनएस)।

लखनऊ । उत्तर प्रदेश में मौसम के तेवर इन दिनों पूरी तरह बदले हुए हैं। एक ओर नौतपा की शुरूआत के साथ प्रदेश के दक्षिणी हिस्से भीषण गर्मी और लू की चपेट में हैं, तो दूसरी ओर तराई और पूर्वांचल में आंधी, गरज–चमक और हल्की बारिश के आसार बन रहे हैं। 25 मई से 2 जून तक चलने वाले नौतपा के दौरान गर्मी और तेज होने की संभावना है।

मौसम विभाग ने सोमवार के लिए प्रदेश के 10 जिलों में लू का रेड अलर्ट और 23 जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। वहीं तराई और पूर्वांचल के 14 जिलों में तेज आंधी, गरज–चमक और हल्की बूंदाबांदी की चेतावनी दी गई है। इन इलाकों में 40 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चल सकती हैं।

विज्ञापन

रविवार को बुंदेलखंड और दक्षिणी जिलों में गर्मी का प्रकोप चरम पर रहा। बांदा 46.8 डिग्री सेल्सियस तापमान के साथ प्रदेश का सबसे गर्म शहर दर्ज किया गया। प्रयागराज, झांसी, उरई और आगरा में भी पारा 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया, जिससे दिनभर लोगों को भीषण गर्मी और लू का सामना करना पड़ा।

आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र, लखनऊ के वरिष्ठ वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के अनुसार पुरवा हवाओं और नमी की मौजूदगी के कारण तराई क्षेत्रों में मौसम बदलने के संकेत हैं, जबकि प्रदेश के बाकी हिस्सों में फिलहाल लू और तेज गर्मी से राहत मिलने के आसार नहीं हैं।

सर्वाधिक तापमान वाले जिले

बांदा– 46.8 डिग्री सेल्सियस

प्रयागराज– 45.6 डिग्री सेल्सियस

झांसी– 45.6 डिग्री सेल्सियस

हमीरपुर– 45.6 डिग्री सेल्सियस

उरई– 45.6 डिग्री सेल्सियस

आगरा– 45.4 डिग्री सेल्सियस

यहां है तपिश और लू का रेड अलर्ट

बांदा, चित्रकूट, कौशांबी, प्रयागराज, फतेहपुर, प्रतापगढ़, मिजार्पुर, चंदौली, वाराणसी, भदोही व आस पास के क्षेत्र।

यहां है तपिश और लू का ऑरेंज अलर्ट

सोनभद्र, जौनपुर, गाजीपुर, कन्नौज, कानपुर देहात, कानपुर नगर, उन्नाव, रायबरेली, अमेठी, सुल्तानपुर, मथुरा, हाथरस, एटा, आगरा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, इटावा, औरैया, जालौन, हमीरपुर, महोबा, झांसी, ललितपुर व आस पास के क्षेत्र।

लखनऊ में कसमंडी कला विवादित ढांचे की जांच को लेकर एक सप्ताह का अल्टीमेटम, सुहेलदेव आर्मी करेगी सुंदरकांड पाठ

मलिहाबाद के कसमंडी कला गांव में दो पुराने ढांचों को लेकर हिंदू और मुस्लिम पक्षों के बीच विवाद बढ़ रहा है। विवादित ढांचे की जांच को लेकर एक सप्ताह का अल्टीमेटम।

(जीएनएस)।

लखनऊ। मलिहाबाद के कसमंडी कला गांव में दो पुराने ढांचे को लेकर विवाद बढ़ता ही जा रहा है। गांव के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के पास स्थित इन ढांचों को लेकर हिंदू व मुस्लिम पक्षों में तनातनी है। इस बीच हिंदू पक्ष के लोगों ने विवादित ढांचे की भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) एवं राज्य पुरातत्व निदेशालय से जांच कराने की मांग की है।

लाखन पासी आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सूरज पासी और स्थानीय लोगों ने कहा कि इस पर शासन ने एक सप्ताह में कोई निर्णय नहीं लिया तो वहां पर एक बड़ा प्रदर्शन किया जाएगा।

कसमंडी कला गांव के पुराने ढांचे को मकबरा बताते हुए मुस्लिम पक्ष ने शुक्रवार को नमाज पढ़ने का प्रयास किया तो शनिवार को हिंदू पक्ष ने हनुमान चालीसा की अनुमति मांगी थी, जो नहीं मिली। दोनों पक्षों को विवादित ढांचे में किसी तरह की धार्मिक गतिविधि न करने को कहा

गया है।

पुलिस व प्रशासन ने दोनों पक्षों से शांति बनाए रखने की अपील की है। ढांचे के पास पीएसी जवान पहरा दे रहे हैं। चारों तरफ रास्ते को बंद कर दिया गया है। आस–पास किसी को भी जाने के लिए मनाही है।

सुहेलदेव आर्मी मंगलवार को करेगी सुंदरकांड पाठ

ढांचों में नमाज पढ़े जाने के विरोध में सुहेलदेव आर्मी भी उतर आयी है। संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष योगेश पासी ने घोषणा की है कि मंगलवार को सैकड़ों कार्यकताओं के साथ ढांचे में सामूहिक रूप से सुंदरकांड और हनुमान चालीसा का पाठ करेंगे। हालांकि पुलिस प्रशासन स्थिति पर नजर बनाए हुए है। अधिकारियों का कहना है कि किसी भी व्यक्ति को धार्मिक गतिविधि की अनुमति नहीं दी जाएगी।

समिति करती है निगरानी, ऐसे होती है जांच

किसी पुरातात्विक स्थल या प्राचीन इमारत की जांच के लिए संस्कृति मंत्री की निगरानी में एडवाइजरी कमेटी गठित है। इसमें प्रमुख सचिव वित्त, प्रमुख सचिव नियोजन, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक, पुरातत्व निदेशालय के निदेशक, भारतीय राष्ट्रीय न्यास (इंटैक) के निदेशक, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय व लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के अध्यक्ष शामिल होंगे

इसके साथ ही, पांच क्षेत्रीय पुरातत्व अधिकारी, प्रदेश में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की सभी इकाइयों (लखनऊ, झांसी, सारनाथ, आगरा, मेरठ आदि) के अधीक्षण पुरातत्वविद सहित 23 सदस्य होते हैं।

इसी समिति को ही किसी इमारत या पुरातात्विक स्थल को नोटिफाई या डीनोटिफाई (अधिसूचित करने या सूची से हटाने) करने व पुरातत्व से संबंधित निर्णय लेने का अधिकार होता है। पुरातत्व निदेशालय की निदेशक रेनू द्विवेदी ने बताया कि अगर किसी की तरफ इस तरह की मांग आती है तो उसके आधार जांच कराई जाती है।

उत्तर प्रदेश के 29 पीपीएस अधिकारियों को तोहफा, बनाए जाएंगे आईपीएएस; आयोग तक पहुंचा प्रस्ताव

(जीएनएस)।

लखनऊ, प्रदेश पुलिस के 29 पीपीएस अधिकारियों को जल्द आईपीएस कैडर में प्रोन्नत किया जाएगा। इसके लिए रिक्त पदों के सापेक्ष 3 गुना अधिक अधिकारियों के नाम संघ लोक सेवा आयोग भेज दिए गए हैं। आयोग यदि प्रस्ताव पर कोई आपत्ति नहीं करता है तो अगले महीने प्रदेश को 29 प्रोन्नत आईपीएस मिल जाएंगे। आयोग द्वारा वर्ष 1998, 1999 और 2000 बैच के अधिकारियों की पदोन्नति की जानी है, हालांकि तीन गुना अधिक नाम भेजने की बाध्यता की वजह से वर्ष 2001 बैच के अफसरों के नाम भी शामिल किए गए हैं।

बता दें कि पीपीएस से आईपीएस कैडर में प्रोन्नति के लिए वर्ष 2026 की 29 रिक्तियों पर पदोन्नति की कार्यवाही होनी है। बीते दिनों इसका प्रस्ताव डीजीपी मुख्यालय और शासन द्वारा संघ लोक सेवा आयोग भेजा गया है। आयोग इस प्रस्ताव पर विचार

करेगा, जिसमें सभी अधिकारियों की सेवा से जुड़े दस्तावेजों और उनके खिलाफ प्रचलित जांचों आदि का परीक्षण होगा। इसमें कोई आपत्ति नहीं होने पर आयोग द्वारा विभागीय प्रोन्नति समिति (डीपीसी) की बैठक आयोजित की जाएगी, जिसमें आयोग के अधिकारियों के साथ मुख्य सचिव, डीजीपी और अपर मुख्य सचिव गृह मौजूद रहेंगे। इसमें जिन नामों पर सहमति बनेगी, उनको आईपीएस कैडर में प्रोन्नत करने का नोटिफिकेशन गृह मंत्रालय द्वारा जारी कर दिया जाएगा।

इनके नामों पर होगा विचार

1998 से 2000 बैच के शोएब इकबाल, सत्यपाल सिंह, राहुल मिठास, आलोक कुमार शर्मा, राजकुमार, महेश सिंह अत्री, विनीत भटनागर, दीपिका अग्निहोत्री, जितेंद्र कुमार श्रीवास्तव, शशि शेखर सिंह, कुलदीप सिंह, ज्ञानेंद्र नाथ प्रसाद, हरेंद्र प्रताप यादव, रफीक अहमद, बंशराज सिंह यादव, डॉ. कृष्ण गोपाल, मधुवन कुमार सिंह, कपिल देव सिंह, बलवंत कुमार चौधरी, राहुल श्रीवास्तव, राजेश कुमार पांडेय, प्रीति बाला गुप्ता, विकास चंद्र त्रिपाठी, पूर्णेंदु सिंह, हरेंद्र कुमार, मार्तण्ड प्रताप सिंह, अभय नाथ त्रिपाठी, पवित्र मोहन त्रिपाठी, देवेश कुमार शर्मा, प्रशांत कुमार प्रसाद, डॉ. अरविंद कुमार, सिद्धार्थ वर्मा, विनय चंद्रा, राजेश कुमार भारतीय, शुभ्रा भास्कर और प्रवीण सिंह चौहान।

UP PMJA : क्या आपका भी आयुष्मान कार्ड पर रुक गया था इलाज? पेमेंट सिस्टम हुआ बहाल, अब नहीं होगी दिक्कत

प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत उत्तर प्रदेश में इलाज कराने वाले मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। योगी आदित्यनाथ सरकार अब इस योजना को और मजबूत और पारदर्शी बनाने पर जोर दे रही है, ताकि लोगों को बिना परेशानी के इलाज मिल सके। राज्य में अब तक 50 लाख से ज्यादा मरीज योजना का फायदा उठा चुके हैं। 91 लाख से अधिक बार अस्पतालों में इलाज कराया गया है।

इसके बदले सरकार ने अस्पतालों को 15 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का भुगतान किया है। हालांकि मई के दूसरे सप्ताह में बैंकिंग सिस्टम में आई तकनीकी दिक्कत की वजह से अस्पतालों का भुगतान कुछ दिनों के लिए अटक गया था। अब समस्या दूर होने के बाद दोबारा भुगतान शुरू कर दिया गया है और अस्पतालों को राहत मिलने लगी है।

तकनीकी गड़बड़ी से रुका था भुगतान

एउ५ की एक रिपोर्ट के अनुसार, साचीज की उएड अर्चना वर्मा के अनुसार 14 मई को नेशनल हेल्थ अथॉरिटी और बैंकों के बीच भुगतान फाइलों के ट्रांसफर के दौरान तकनीकी दिक्कत आ गई थी। इसके कारण करीब 633 करोड़ रुपये की राशि होल्ड पर चली गई। इससे कई अस्पतालों को उनके क्लेम का पैसा समय पर नहीं मिल पाया।

उन्होंने बताया कि ज्यादातर दावों

को राज्य स्वास्थ्य एजेंसी पहले ही मंजूरी दे चुकी थी, लेकिन बैंकिंग सिस्टम में आई समस्या के कारण पेमेंट प्रक्रिया रुक गई थी। इससे सरकारी और निजी दोनों तरह के अस्पतालों में चिंता बढ़ गई थी।

23 मई से फिर शुरू हुआ पेमेंट

प्रदेश सरकार ने मामले को गंभीरता से लेते हुए तुरंत कार्रवाई शुरू की। चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग ने नेशनल हेल्थ अथॉरिटी और संबंधित बैंकों के साथ लगातार बैठकें कर समाधान तलाशा। 22 मई को तकनीकी समस्या को पूरी तरह ठीक कर लिया गया। इसके बाद 23 मई को अस्पतालों को 100 करोड़ रुपये का भुगतान जारी कर दिया गया। अधिकारियों का कहना है कि अगले एक–दो दिनों में बाकी करीब 500 करोड़ रुपये भी अस्पतालों के खातों में भेज दिए जाएंगे।

अस्पतालों को चरणबद्ध तरीके से मिल रहा पैसा

साचीज की सीईओ ने बताया कि अब भुगतान प्रक्रिया सामान्य हो चुकी है और सूचीबद्ध अस्पतालों को चरणबद्ध तरीके से पैसा भेजा जा रहा है। सरकार की कोशिश है कि मरीजों के इलाज पर किसी तरह का असर न पड़े और अस्पतालों को समय पर भुगतान मिलता रहे।

उन्होंने बताया कि राज्य सरकार लगातार नए अस्पतालों को योजना से जोड़ रही है, ताकि गांव और दूरदराज इलाकों के लोगों को भी बेहतर इलाज मिल सके। इसके साथ ही गोल्डन कार्ड वितरण, ई–केवाईसी, हेल्प डेस्क और डिजिटल मॉनिटरिंग सिस्टम को भी मजबूत किया जा रहा है।

अधिकारियों को दिए गए सख्त निर्देश

अपर मुख्य सचिव चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण अमित घोष ने भी योजना की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को साफ निर्देश दिए कि अस्पतालों के भुगतान में किसी तरह की अनावश्यक देरी नहीं होनी चाहिए। साथ ही तकनीकी सिस्टम को और मजबूत बनाने पर भी जोर दिया गया है, ताकि भविष्य में इस

मरी हुई से तलाकशुदा बेटी अच्छी', कौन हैं जनरल तुषार मेहता? क्यों दिया ये बयान?

(जीएनएस)।

भोपाल के हाई–प्रोफाइल ट्विशा शर्मा मौत मामले में सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने बेहद अहम और भावुक टिप्पणी की। उन्होंने कहा, 'तलाकशुदा बेटी मरी हुई बेटी से ज्यादा अच्छी होती है', अदालत में की गई यह टिप्पणी अब देशभर में चर्चा का विषय बन गई है। मामले की सुनवाई मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्य बागची और जस्टिस विपुल एम. पंचोली की बेंच के सामने हुई।

मध्य प्रदेश सरकार की ओर से एसजी तुषार मेहता पेश हुए, जबकि आरोपी परिवार की तरफ से वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ दवे ने पक्ष रखा। सुनवाई के दौरान तुषार मेहता ने ट्विशा शर्मा के परिवार को लेकर भी नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि अगर परिवार ने समय रहते बेटी की शिकायतों को गंभीरता से लिया होता, तो शायद स्थिति इतनी भयावह नहीं होती।

उन्होंने समाज में बढ़ती दहेज प्रताड़ना और घरेलू हिंसा पर चिंता जताते हुए कहा कि कई परिवार सामाजिक दबाव और रिश्ते बचाने की कोशिश में बेटियों की पीड़ा को नजरअंदाज कर देते हैं। इसके बाद सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गए हैं। तुषार मेहता भारत में एक वरिष्ठ अधिवक्ता हैं और वर्तमान में भारत के सॉलिसिटर जनरल के रूप में कार्यरत हैं।

तुषार मेहता ने गुजरात यूनिवर्सिटी में पढ़ाई की

सीके दफ्तरी के बाद वे भारत के दूसरे सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले सॉलिसिटर जनरल हैं। 11 सितंबर 1964 को गुजरात के जामनगर में जन्मे तुषार मेहता ने गुजरात यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की, जहां से उन्होंने अपनी लॉ की डिग्री हासिल की और 5 गोल्ड मेडल जीते। उन्हें एमिटी

यूनिवर्सिटी, नोएडा और कर्नाटक स्टेट लॉ यूनिवर्सिटी से मानद डॉक्टरेट की डिग्री भी मिली है।

1987 में शुरू हुआ वकालत का सफर

1987 में गुजरात बार काउंसिल में एक वकील के तौर पर रजिस्टर होने के बाद, तुषार मेहता ने गुजरात हाई कोर्ट के सीनियर वकील कृष्णकांत वखारिया के मार्गदर्शन में अपने कानूनी करियर की शुरूआत की। 2008 में, 42 साल की उम्र में, गुजरात हाई कोर्ट ने उन्हें सीनियर वकील के तौर पर नामित किया गया था और उसके बाद साल 2008 में उन्हें गुजरात का एडिशनल एडवोकेट जनरल नियुक्त बनाया गया।

तुषार मेहता 2018 में सॉलिसिटर जनरल नियुक्त बने

साल 2014 में तुषार मेहता को भारत का एडिशनल सॉलिसिटर जनरल नियुक्त किया गया था और इसके बाद 2018 में तुषार मेहता को तीन साल के लिए भारत का सॉलिसिटर जनरल नियुक्त बने और तब से उनके कार्यकाल को नियमित रूप से बढ़ाया जाता रहा है।

क्यों दिया ये बयान?

सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने ये टिप्पणी इसलिए कही क्योंकि ट्विशा शर्मा की मौत से पहले लगातार अपने परिवारवालों को मैसेज कर रही थी कि वो ससुराल में खुश नहीं है, उसे लगातार प्रताड़ित किया जा रहा है लेकिन घरवालों ने उसके मैसेज को सीरयसली ना लेते हुए बार–बार उससे यही कहा कि 'अच्छे लोग हैं एडजस्ट करो।' 12 मई को वो अपने ससुराल में मृत पाई गई, जिसके बाद उसके परिवारवालों का रो–रोकर बुरा हाल है और वो ये कह रहे हैं कि 'काश हम उसकी बात सुन लेते तो शायद वो आज जिंदा होती।'

क्या कहा किरण बेदी ने?

पूर्व IPS अधिकारी किरण बेदी ने भी तुषार मेहता की बात का समर्थन करते हुए कहा कि 'मेरी नजर में आरोपी या यूं कहें कि आरोपी के परिवार ने निश्चित रूप से गलतियां की हैं। सबसे पहले, आरोपी की तरफ से मुख्य गलती यह थी कि पति खुद ही मौके से भाग गया, दूसरी गलती सास ने की, जिन्होंने बार–बार ऐसी पक्की बातें कही, ऐसी टिप्पणियां जिनसे पीड़ित परिवार को गहरा दुख और तकलीफ हुई। किसी को भी पीड़ित परिवार के जख्मों पर नमक नहीं छिड़कना चाहिए, यह माता–पिता को

क्वेटा धमाके के बाद कांप उठा इस्लामाबाद! आतंकियों से निपटने के लिए बनाई जा रही है 'सीक्रेट' फौज

(जीएनएस)।

बलूचिस्तान की राजधानी द४ी३३ं में हुए बड़े आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान की ग़ुँ९ रँ१ सरकार पूरी तरह अलर्ट मोड में आ गई है। चीनी इंजीनियरों और बड़े बांध–विद्युत प्रोजेक्ट्स पर लगातार बढ़ते हमलों ने इस्लामाबाद की चिंता बढ़ा दी है।

अब पाकिस्तान सरकार ने "वापदा सुरक्षा बल" नाम से एक नई स्पेशल फोर्स बनाने का फैसला लिया है, जिसका मकसद पानी और बिजली से जुड़े अहम प्रोजेक्ट्स की सुरक्षा करना होगा। खास बात ये है कि चीन की तरफ से लगातार दबाव और चेतावनी के बाद इस फैसले को तेजी से आगे बढ़ाया गया है।

क्वेटा हमले ने पाकिस्तान को हिला दिया

क्वेटा में रेलवे फाटक के पास सैनिकों को ले जा रही ट्रेन को निशाना बनाया गया। विस्फोटकों से भरी कार ट्रेन से टकराई और जोरदार धमाका हुआ। पाकिस्तान के मुताबिक करीब 30 सैनिक और उनके परिवार वाले मारे गए, जबकि बीएलए ने इससे कहीं ज्यादा मौतों का दावा किया है। इस हमले के बाद पाकिस्तान में सुरक्षा व्यवस्था पर फिर सवाल उठने लगे हैं। खासकर बलूचिस्तान में हालात लगातार बिगड़ते दिखाई दे रहे हैं।

चीन के दबाव में बना नया सुरक्षा प्लान

China लंबे समय से पाकिस्तान पर अपने नागरिकों की सुरक्षा बढ़ाने का दबाव डाल रहा है। दासू हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट पर पहले हुए आतंकी हमलों में कई चीनी इंजीनियर मारे गए थे। इसके बाद चीन ने साफ कहा था कि अगर सुरक्षा नहीं मिली तो फंडिंग और निवेश पर असर पड़ सकता है। अब

पाकिस्तान ने "वापदा सुरक्षा बल अधिनियम 2026" लाकर अलग सुरक्षा फोर्स बनाने का फैसला किया है ताकि चीन का भरोसा दोबारा जीता जा सके।

CPEC प्रोजेक्ट्स पर पहले से सेना की तैनाती

सुरक्षा के लिए पाकिस्तान सेना की स्पेशल सिक्योरिटी डिवीजनों को पहले से लगाया गया है। ये फोर्स बलूचिस्तान से लेकर गिलगित–बाल्टिस्तान तक चीनी प्रोजेक्ट्स की निगरानी करती है। लेकिन हंर्स्र के कई प्रोजेक्ट्स इस सुरक्षा दायरे में नहीं आते थे। दासू हमले के बाद पाकिस्तान को एहसास हुआ कि सिर्फ सेना की मौजूदा व्यवस्था काफी नहीं है। इसी वजह से अब अलग सुरक्षा बल तैयार किया जा रहा है।

हमलों से बढ़ी लागत और रुके प्रोजेक्ट्स

दासू हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट पर हमलों के बाद चीन ने करीब एक साल तक काम रोक दिया था। सुरक्षा और मुआवजे को लेकर लंबी बातचीत चली, तब जाकर काम दोबारा शुरू हो पाया। इस देरी की वजह से प्रोजेक्ट की लागत भी काफी बढ़ गई। पाकिस्तान सरकार को डर है कि अगर ऐसे हमले जारी रहे तो विदेशी निवेशक और कंपनियां देश छोड़ सकती हैं। इसलिए अब हर बड़े प्रोजेक्ट पर अतिरिक्त सुरक्षा देने की तैयारी हो रही है।

निवेश के लिए खतरे की घंटी बना पाकिस्तान

लगातार आतंकी हमलों ने पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय छवि को बड़ा नुकसान पहुंचाया है। बलूचिस्तान में बढ़ती हिंसा और चीनी कर्मचारियों पर हमलों ने दुनिया को संदेश दिया है कि वहां बड़े निवेश करना जोखिम भरा हो सकता है। चीन फिलहाल पाकिस्तान का सबसे बड़ा आर्थिक साझेदार बना हुआ है, लेकिन सुरक्षा हालात खराब होने से दोनों देशों के रिश्तों पर भी असर पड़ सकता है। क्वेटा हमला पाकिस्तान के लिए सिर्फ सुरक्षा नहीं बल्कि आर्थिक संकट की चेतावनी भी माना जा रहा है।

PRGI No.: UPHIN/25/A1698 Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh.
and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : VINOD KUMARI
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

सम्पादकीय

विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने भारत-अमेरिका दोनों को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बताया

अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो और भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर के बीच आज द्विपक्षीय बैठक हुई और बाद में संयुक्त प्रेस कांप्रेंस भी हुई। इसी दौरान अमेरिकी विदेश मंत्री रूबियो ने भारत को अमेरिका के सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदारों में से एक बताते हुए दोनों को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बताया और कहा कि यही साझा लोकतांत्रिक मूल्य दोनों देशों को एक दूसरे के निकट लाते हैं।

विदेश मंत्री रूबियो ने कहा कि रणनीतिक साझेदारी मात्र सामान्य संबंध नहीं होती, बल्कि यह वह रिश्ता होता है जिसमें दो देशों के हित एक दूसरे से जुड़े होते हैं और दोनों मिलकर वैश्विक चुनौतियों का समाधान निकालते हैं।

इसी अवसर पर भारतीय विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कहा कि भारत और अमेरिका की रणनीतिक साझेदारी दोनों देशों के साझा राष्ट्रीय हितों पर आधारित हैं। उन्होंने यह भी कहा कि दोनों देशों के बीच लगातार संपर्क और संवाद ने द्विपक्षीय सहयोग को और मजबूत किया है।

दरअसल दोनों देशों के विदेश मंत्रियों की यह बैठक विदेश सचिव विव्रम मिस्री की वाशिंगटन डीसी यात्रा से ठीक पांच सप्ताह बाद संपन्न हुई है। मतलब यह कि इस बैठक की पूरी रूपरेखा पांच सप्ताह में तैयार हुई है। ये पांच सप्ताह दोनों देशें के हितों में जो व्यावहारिक उतार-चढ़ाव आया है, उसके अतिरिक्त ज्यादा वुछ बातें करने की जरूरत नहीं महसूस हुईं।

कारण कि पश्चिम एशिया हो या मध्य पूर्व एशिया, ईरान हो या यूव्रेन, होर्मूज स्ट्रेट हो या ऊर्जा संकट दोनों देशों के हित इन मुद्दों से जुड़े हैं। इन मुद्दों के अलावा भारत और अमेरिका के बीच ऊर्जा, व्यापार, निवेश, महत्वपूर्ण तकनीक और लोगों के बीच संबंधों को मजबूत बनाने जैसे विषयों पर बातचीत हुईं। सच तो यह है कि अमेरिका भारत से और भी ज्यादा सहयोग की उम्मीद लगाए बैठा है। अमेरिका इस बात को अच्छी तरह जानता है कि उसके कहने पर भारत न तो रूस से व्यापारिक व सामरिक रिश्ते सीमित करने वाला है और न ही चीन प्रत्यक्ष संघर्ष करने वाला है।

भारत की अपनी जरूरतें हैं जो मात्र अमेरिका पूरी नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त यदि जरूरत पड़ी तो भारत रूस से व्यापारिक और सामरिक संबंधों की समीक्षा खुद करेगा। इसी तरह जरूरत पड़ी तो चीन के साथ रणनीतिक संबंधों को नरम-गरम कर सकता है किन्तु यह पैसला खुद भारत करेगा न कि भारत से अमेरिका करवा सकता है। ब्रिक्स का नेतृत्व भारत कर रहा है और भारत को छोड़कर सारे सदस्य देश अमेरिका के प्रति कड़ा तेवर अपनाए हुए हैं। ब्राजील, चीन और रूस व्यापार के लिए डालर के स्थान पर नई ब्रिक्स मुद्रा लाने पर आमादा हैं। लेकिन अमेरिका को भारत पर भरोसा है कि वह अमेरिका विरोधी इस तहर के पैसले नहीं होने देगा। इसके साथ ही अमेरिका यह बात अच्छी तरह जानता है कि हिन्द महासागर में शक्ति संतुलन कायम करने में चीन की चुनौतियों का सामना करने के लिए ही भारत अण्डमान निकोबार में रणनीतिक जलमार्ग का निर्माण कर रहा है। वास्तविकता तो यही है कि भारत भी इस तथ्य से अच्छी तरह परिचित है कि आज भारत की जरूरतें मात्र रूस या वुछ अन्य देशों से पूरी नहीं हो सकतीं। अमेरिका शक्ति और संपन्नता के जिस शिखर पर पहुंच चुका है, वहां तक अभी दुनिया का कोई देश नहीं पहुंच पाया है। इसलिए वाशिंगटन डीसी से दुश्मनी नहीं मित्रता ही राष्ट्रीय हितों के लिए करना हर दृष्टि से लाभदायक होगा। लब्बोलुआब यह है कि भारत और अमेरिका के बीच संबंधों में किसी एक व्यक्ति के कारण कड़वाहट वुछ दिनों के लिए आ भी जाए तो वह आत्मीय हितों के विरुद्ध ज्यादा दिनों तक स्थाईं भाव के रूप में कायम नहीं रह पाती। दोनों ही देश लोकतांत्रिक हैं, दोनों की अपनी-अपनी सीमाएं हैं फिर भी वुछ वैश्विक परिस्थितियां दोनों को एक पेज पर खड़ा करने के लिए विवश करती हैं यानि स्वाभाविक सहयोगी बनाती हैं।

एस-400, एंटी-स्टील्थ रडार, रूसी एसयू-57, पाकिस्तान जे-35 स्टील्थ जेट के साथ जो 'किल चेन' बनाएगा उसे कैसे काउंटर करे भारत?

पाकिस्तान की भौगोलिक बनावट ऐसी है कि देश की चौड़ाई में बहुत कम है। इसका मतलब है कि पाकिस्तान के पास 'रणनीतिक गहराई' नहीं है। अगर भारतीय सेना अंदर घुसती है तो पाकिस्तान के पास पीछे हटने की जगह नहीं है। पाकिस्तान जे-35ए इसी कमी को दूर करने के लिए खरीद रहा है।

(जीएनएस)।

इस्लामाबाद/नई दिल्ली: पाकिस्तान की वायुसेना ने पुष्टि कर दी है कि वो चीन से जे-35ए स्टील्थ फाइटर जेट खरीदने वाली है। फिलहाल ये पता नहीं चल पाया है कि चीन कब तक पाकिस्तान एयरफोर्स के पांचवीं पीढ़ी का फाइटर जेट सौंपेगा लेकिन डिफेंस की दुनिया में इसे भारत के लिए एक बड़ी चुनौती के तौर पर देखा जा रहा है। कुछ लोगों का कहना है कि पाकिस्तानी वायुसेना साल 2030 तक भारत के खिलाफ एक ऐसी रणनीति तैयार कर रही है जिससे भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमान भारतीय सीमा के बहुत अंदर रहने के बावजूद सुरक्षित नहीं रहेंगे।

इसमें 'नो डिफेंस डेप्थ' का जिक्र किया गया है जिसका मतलब है कि कोई देश अपनी सीमा के बहुत अंदर सुरक्षित रहते हुए जंग लड़े। लेकिन पाकिस्तान की भौगोलिक बनावट ऐसी है कि देश की चौड़ाई में बहुत कम है। इसका मतलब है कि पाकिस्तान के पास 'रणनीतिक गहराई' नहीं है। अगर भारतीय सेना अंदर घुसती है तो पाकिस्तान के पास पीछे हटने की जगह नहीं है। इसलिए पाकिस्तान एयरफोर्स की रणनीति अब यह है कि "हम अपनी जमीन पर रुककर बचाव नहीं करेंगे बल्कि भारत के हथियारों और विमानों को भारतीय सीमा के अंदर ही इतनी दूर धकेल देंगे कि वे हमारे करीब आ ही न सकें।"

एनबीटी ऑनलाइन ने पाकिस्तान के इस कथित रणनीति को लेकर भारतीय वायुसेना के पूर्व पायलट और एविएशन आर्किटेक्ट विजयेन्द्र के ठाकुर से जानने की कोशिश की ये कितना खतरनाक हो सकता है। विजयेन्द्र के ठाकुर पूर्व जगुआर फाइटर जेट पायलट रह चुके हैं और अब कई नेशनल इंटरनेशनल डिफेंस प्लेटफॉर्म्स के लिए लेख लिखते हैं। उन्होंने एनबीटी ऑनलाइन को बताया कि जाहिर तौर पर एक स्टील्थ फाइटर जेट और उसमें लगी लंबी दूरी तक मार करने वाली एयर टू एयर मिसाइल का प्रभाव दिखेगा। लेकिन उन्होंने ये भी बताया कि भारत इस रणनीति को कैसे काउंटर सकता है। पहले हम जानते हैं कि आखिर पाकिस्तान वायुसेना कथित तौर पर किस रणनीति पर काम कर रही है।

J-35A स्टील्थ फाइटर जेट- पाकिस्तान चीन से पांचवीं पीढ़ी का स्टील्थ (रडार की पकड़ में न आने वाला) फाइटर जेट J-35A खरीद रहा है। रणनीति यह है कि ये विमान पाकिस्तानी सीमा के अंदर गश्त करेंगे। रडार पर न दिखने के कारण ये भारत के लिए एक अदृश्य दीवार की तरह काम करेंगे।

PL-17 मिसाइल- ये चीन की सबसे खतरनाक काफी ज्यादा तक हवा से हवा में मार करने वाली (VLRAAM) मिसाइल है। इसकी मारक क्षमता 300 से 400 किलोमीटर मानी जाती है। J-35A विमान इसी मिसाइल से लैस होंगे। यानी पाकिस्तानी सीमा के अंदर रहते हुए भी वे भारतीय आसमान में सैकड़ों किलोमीटर दूर उड़ रहे विमान को मार गिरा सकते हैं।

किल चेन नेटवर्क- पाकिस्तान को चीन का सैटेलाइट नेटवर्क मिलेगा जिसके सहारे वो किल चेन नेटवर्क तैयार कर सकता है। इसका मतलब है कि पाकिस्तानी रडार और विमान अपनी लोकेशन छुपाने के लिए अपने मुख्य रडार बंद रखेंगे ताकि भारत को पता न चले कि वे कहां हैं। वे चीन के सैटेलाइट्स, ग्राउंड सेंसर्स या डेटा लिंक के जरिए 'साइलेंटली' भारतीय विमानों की लोकेशन ट्रैक करेंगे और बिना चेतावनी के मिसाइल दाग देंगे।

भारत को लेकर पाकिस्तान की रणनीतिक सोच क्या है?

भारत के पास ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल और Scalp-EG (फ्रांसीसी मिसाइल जो राफेल में लगती है) जैसे अचूक हथियार हैं। ऑपरेशन सिंदूर में देखने को मिला कि भारत ने सुखोई Su-30MKI और राफेल विमान भारतीय सीमा के सुरक्षित अंदर रहकर ही इन मिसाइलों को लॉन्च कर पाकिस्तान के टारगेट को तबाह किया। लेकिन पाकिस्तान के J-35A और PL-17 मिसाइलों की वजह से आगे ऐसा करना मुश्किल होगा। भारतीय लड़ाकू विमानों को मिसाइल फायर करने के लिए भारतीय सीमा से कम से कम 220 किलोमीटर और पीछे (भारत की तरफ अंदर) हटना पड़ेगा। अगर वे सीमा के पास आए तो PL-17 मिसाइलों का उन्हें खतरा होगा। पाकिस्तान की रणनीति इसी सोच के आधार पर तैयार की जा रही है।

पाकिस्तान के पास रणनीतिक गहराई नहीं होने की वजह से उसे घुटनों पर लाने के लिए भारत को सिर्फ पहला लेयर ही तोड़ना है। पाकिस्तान के जितने भी एयरबेस हैं वो भारतीय सीमा के काफी करीब हैं और उन्हें जब बनाया गया था वो जमाना लंबी दूरी की हवा से हवा में मार करने वाली मिलाइलों का नहीं था। इसलिए डॉगफाइट में तो इससे काफी फायदा मिल सकता है लेकिन अब जब लंबी दूरी की सटीक क्षमता वाली मिसाइलें आ गई हैं तो ये एयरबेस मुसीबत बन चुके हैं। ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान की ये कमजोरी बुरी तरह से उजागर हो चुकी हैं।

भारत अभी क्या कर रहा है?

ऐसा नहीं है कि भारतीय वायुसेना हाथ पर हाथ रखकर बैठी है। आपको याद होगा पिछले साल भारत ने ब्रिटेन के स्टील्थ फाइटर जेट F-35B को केरल के पास ट्रैक कर लिया था। इसके अलावा ईरान ने मौजूदा युद्ध में कम से कम 4 से 5 अमेरिकी स्टील्थ लड़ाकू विमानों को निशाना बनाया तो फिर आप भारत की तैयारियों का अंदाजा लगा सकते हैं। भारत के पास एक मल्टी लेयर्ड एयर डिफेंस सिस्टम है जो पाकिस्तानी जे-35 स्टील्थ फाइटर जेट को मारने की क्षमता रखता है।

S-400 Triumf दुनिया की सबसे एडवांस एयर डिफेंस प्रणालियों में गिनी जाती है। इसकी लंबी दूरी की मिसाइलें दुश्मन के विमान, ड्रोन और क्रूज मिसाइलों को काफी दूर से ट्रैक और इंटरसेप्ट कर सकती हैं। हालांकि सिर्फ S-400 पर्याप्त नहीं है। असली चुनौती स्टील्थ विमानों को समय रहते 'पकड़ने' की होती है। इसी संदर्भ में पूर्व वायुसेना पायलट विजयेन्द्र के ठाकुर ने नवभारत टाइम्स से कहा कि भारत को "काउंटर-स्टील्थ रडार" नेटवर्क विकसित करना चाहिए और उसे S-400 से जोड़ना चाहिए।

भारत पहले से ही लंबी दूरी के रडार, लो-फ्रीक्वेंसी सेंसर और मल्टी-लेयर एयर डिफेंस नेटवर्क पर काम कर रहा है। DRDO स्वदेशी अएरअ रडार और बेहतर इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम विकसित कर रहा है। ये स्टील्थ खतरों को पकड़ने के लिए ही डिजाइन किए गये हैं। इसके अलावा भारत का ध्यान "नेटवर्क सेंट्रिक वारफेयर" पर है और इसको लेकर काफी ज्यादा काम किया गया है। यानी सेना, वायुसेना और नौसेना के सेंसर और हथियार इंटीग्रेटेड नेटवर्क में काम करें।

Su-57 लड़ाकू विमान हो सकता है भारत के लिए समधान

विजयेन्द्र ठाकुर ने एनबीटी ऑनलाइन से एक और महत्वपूर्ण बात कही वो ये कि भारत को Sukhoi Su-57D (दो पायलट वाला रूसी स्टील्थ फाइटर जेट) और Sukhoi S-70 Okhotaik जैसे प्लेटफॉर्म्स पर भी विचार करना चाहिए। इसके पीछे की वजह सिर्फ "स्टील्थ बनाम स्टील्थ" नहीं है। बल्कि आधुनिक युद्ध में मानवयुक्त और मानव रहित प्लेटफॉर्म की टीमिंग यानी MUM-T (Mannfed-Unmanned Teaming) बेहद महत्वपूर्ण होती जा रही है। यानि कल्पना कीजिए एक स्टील्थ फाइटर सुरक्षित दूरी पर उड़ रहा है जबकि उसके साथ कई अक-संचालित ड्रोन आगे जाकर दुश्मन के रडार, एयर डिफेंस और फाइटर्स की जानकारी जुटा रहे हैं। इससे पायलट का जोखिम कम होता है और दुश्मन के एयर डिफेंस सिस्टम पर भारी दबाव बनता है।

भारत का सबसे बड़ा जवाब क्या हो सकता है?

काउंटर-स्टील्थ रडार, अक आधारित बैटल मैनेजमेंट सिस्टम, लंबी दूरी की एयर-टू-एयर मिसाइलें, स्वदेशी ड्रोन स्वार्म, इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर क्षमता, स्पेस आधारित निगरानी और साइबर डिफेंस।

कुल मिलाकर देखा जाए तो आधुनिक और भविष्य में होने वाले युद्ध डॉगफाइट के नहीं होंगे बल्कि डेटा आधारित युद्ध होगा। पाकिस्तान की रणनीति भारतीय वायुसेना को सीमा से दूर रखने की है और स्टील्थ आधारित नेटवर्क युद्ध के जरिए मनोवैज्ञानिक बढ़त हासिल करना। लेकिन भारत के पास तकनीकी क्षमता, औद्योगिक आधार और रणनीतिक अनुभव तीनों मौजूद हैं। फिलहाल के लिए एक चुनौती एक ऐसा इंटीग्रेटेड इकोसिस्टम बनाने की है जिसमें रडार, मिसाइल, फाइटर, ड्रोन और अक सब एक साथ काम करें और एक ऐसा किल चेन नेटवर्क तैयार करें जिसमें पाकिस्तान उलझ कर रह जाए।

बॉलीवुड के 4 कपल, जिनकी ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री बनी असली लव स्टोरी, शूटिंग सेट पर शुरू हुआ था प्यार

(जीएनएस)।

बॉलीवुड सिर्फ फिल्मों, गानों और ग्लैमर के लिए ही नहीं जाना जाता बल्कि यहां कई ऐसी प्रेम कहानियां भी जन्मी हैं जो किसी फिल्मी स्क्रिप्ट से कम नहीं लगतीं। कई बार स्टार्स किसी फिल्म, विज्ञापन या शूटिंग सेट पर साथ काम करते-करते इतने करीब आ जाते हैं कि रील लाइफ की केमिस्ट्री धीरे-धीरे रियल लाइफ प्यार में बदल जाती है।

कैमरे के सामने शुरू हुई प्रेम कहानी

आज हम आपको बॉलीवुड के उन चर्चित कपल्स के बारे में बता रहे हैं, जिनकी प्रेम कहानी कैमरे के सामने शुरू हुई और फिर हमेशा के लिए जिंदगी का हिस्सा बन गई।

-रितेश देशमुख और जेनेलिया डी सूजा की प्रेम कहानी बॉलीवुड की सबसे प्यारी लव स्टोरीज में गिनी जाती है। दोनों की पहली मुलाकात फिल्म 'तुझे मेरी कसम' (ळ४ाँ टी१ डंरें) के दौरान हुई थी।

-कहा जाता है कि जब जेनेलिया हैदराबाद पहुंची थीं, तब उन्होंने रितेश को एक राजनेता के बेटे के तौर पर देखा था। शुरूआत में जेनेलिया ने रितेश से ज्यादा बातचीत नहीं की लेकिन फिल्म की शूटिंग के दौरान दोनों के बीच दोस्ती बढ़ती गई। रितेश का मजाकिया स्वभाव और सादगी जेनेलिया को पसंद आने लगा था।

-धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे के बेहद करीब आ गए। करीब 10 साल तक रिलेशनशिप में रहने के बाद दोनों ने साल 2012 में शादी कर ली थी। आज भी ये जोड़ी बॉलीवुड के सबसे पसंदीदा कपल्स में शामिल है।

विराट कोहली-अनुष्का शर्मा (श्१३ ङ्ङ्ुँ' ल्ला अल्ल४रँ' रँ१')

-विराट कोहली और अनुष्का शर्मा की प्रेम कहानी किसी परीकथा जैसी मानी जाती है। दोनों पहली बार साल 2013 में एक शैंपू विज्ञापन की शूटिंग के दौरान मिले थे।

-शूटिंग के बाद दोनों के बीच बातचीत शुरू हुई और धीरे-धीरे उनकी दोस्ती प्यार में बदल गई। क्रिकेट मैदान से लेकर फिल्मी इवेंट्स तक, दोनों अक्सर साथ नजर आने लगे थे। अनुष्का शर्मा कई मैचों में विराट कोहली को सपोर्ट करती दिखाई दी थीं। विराट कोहली भी खुलकर अनुष्का शर्मा के समर्थन में खड़े रहे थे।

-रिश्ते में उतार-चढ़ाव भी आए और एक समय ऐसा भी आया जब दोनों के अलग होने की खबरें सामने आईं लेकिन बाद में दोनों फिर साथ आए और उनका रिश्ता पहले से ज्यादा मजबूत हो गया। साल 2017 में दोनों ने इटली में बेहद निजी समारोह में शादी कर ली। आज विराट और अनुष्का देश के सबसे चर्चित और प्रेरणादायक कपल्स में गिने जाते हैं।

दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह

-दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह की लव स्टोरी की शुरूआत फिल्म गोलियों की रासलीला राम-लीला की शूटिंग के दौरान हुई थी।

-उदयपुर में फिल्म की लंबी शूटिंग के दौरान दोनों के बीच शानदार बॉन्डिंग बन गई। पर्दे पर उनकी रोमांटिक केमिस्ट्री दर्शकों को इतनी पसंद आई कि फिल्म सुपरहिट साबित हुई।

वहीं असल जिंदगी में भी दोनों एक-दूसरे के करीब आते चले गए।

पीएम की विदेश यात्राओं से राहुल-ममता के पेट में दर्द क्यों? क्या ये मंसूबा पाले हैं राहुल-ममता

(जीएनएस)।

विपक्ष को मोदी सरकार के जाने का इंतजार है. इंतजार 2014 से ही विपक्षी कर रहे हैं. राहुल गांधी को अब पक्का भरोसा हो गया है कि नरेंद्र मोदी की सरकार अगले साल तक गिर जाएगी. शनिवार को अल्पसंख्यक सलाहकार समिति की बंद कमरे में हुई बैठक में उन्होंने अपनी भविष्यवाणी बताई. बंगाल की निवर्तमान मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी इसी तरह की आस लगाए बैठी हैं. उन्होंने कहा है- 'आप (मोदी) दिल्ली में सत्ता से गिरेंगे तो भुगतना होगा कर्मों का फल. मुझे उसी दिन का इंतजार है.' कुछ इसी तरह की उम्मीद अखिलेश यादव, अरविंद केजरीवाल और तेजस्वी यादव को भी होना चाहिए. इसलिए कि नरेंद्र मोदी के विरोध का अलख फिलवक्त विपक्ष के ये ही नेता जगाए हुए हैं.

इस वक्त विपक्ष के नेता ये कयास लगा रहे हैं कि पीएम मोदी की सरकार जल्द गिर जाएगी. फोटो- पीटीआई

नरेंद्र मोदी के सत्ता से जल्दी जाने का जाप करने वाले इंडिया ब्लाक के विपक्षी नेताओं की ताकत को तथ्यों से समझिए. पिता मुलायम सिंह यादव की अनुकंपा से अखिलेश यादव एक बार यूपी के मुख्यमंत्री बने. दोबारा उनकी वापसी नहीं हुई. 2017 से ही वे दोबारा सीएम बनने का अवसर तलाश रहे हैं. अरविंद केजरीवाल 2 बार यानी 10 साल दिल्ली में प्रचंड बहुमत वाली सरकार के मुखिया थे. दोनों से भाजपा ने ही सत्ता छीनी है. राहुल गांधी 2014 से खुद को आजमा रहे हैं. अभी तक सफलता इतनी भर मिली है कि वे इस बार नेता प्रतिपक्ष की कुर्सी तक घंहुच गए हैं. तेजस्वी यादव तो बिहार में राजद के अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं. सत्ता जाने के 10 साल बाद 2015 में राजद ने 80 सीटें जीती थीं. 2025 में उसकी

सीटें खिसक कर 25 पर आ गई हैं. उनमें भी एक ने विधायक ने साथ छोड़ दिया है.

विपक्षी नेताओं की समझ

ममता 15 साल तक बंगाल की मुख्यमंत्री रहीं हैं. केंद्र में भी कभी एनडीए सरकार में मंत्री थीं. अखिलेश यादव और अरविंद केजरीवाल भी मुख्यमंत्री रह चुके हैं. राहुल गांधी 3 बार जोर आजमाइश में विफल रहने के बावजूद लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष हैं. इसलिए इन्हें नासमझ मानना भूल होगी. पर, इनके बयानों से इनके संसदीय ज्ञान का अनुमान तो लग ही जाता है. इन विपक्षी नेताओं को इस बात पर आपत्ति है कि मध्य पूर्व एशिया की स्थितियों के कारण देश में ईंधन की कमी है, फिर भी पीएम मोदी विदेशों की सैर कर रहे हैं. ऐसा सवाल न संसदीय मयार्दा के अनुकूल है और न संसदीय व्यवस्था की समझ ही दशार्ता है.

विरोध के बावजूद विस्तार

इन्हें इतनी तो सामान्य समझ होगी ही कि मोदी तफरीह के लिए विदेश दौर पर नहीं गए हैं. उनके टूर में कई महत्वपूर्ण व्यावसायिक और सामरिक डील भी हो रही हैं. मोदी देश के पीएम हैं तो भविष्य की चिंता का भार भी उन पर है. जिस भाजपा के मोदी नेता हैं, वह तात्कालिक लाभ के लिए कोई काम नहीं करती. भाजपा का लंबे समय तक शासन का प्लान है. इसलिए मोदी मुंह भी नहीं छिपा सकते. 10 साल तो उनके कामों को लोगों ने सराहा और अगले 5 साल और काम करने की मोहलत दे दी है. इसलिए अगले साल तक मोदी सरकार गिरने की राहुल की भविष्यवाणी का कोई तार्किक या तथ्यात्मक आधार नहीं दिखता. भाजपा का जिस कदर विस्तार हो रहा है, उससे ममता की आस भी पूरी होने की गुंजाइश नहीं दिख रही है. उल्टे ममता की टीएमसी के सांसद-विधायक भाजपा से गलबहियां के लिए बेताब दिख रहे हैं.

अब जरा पीएम के विदेश दौरे की जरूरत समझिए कि कि किन वजहों से प्रधानमंत्री का विदेश दौरा जरूरी लगता है. रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद ही दुनिया के देश वैचारिक रूप से बंटने लगे थे. कुछ तो इस-उस ओर खड़े भी हो गए. इसका असर दुनिया ने महसूस किया है. असर आज भी बरकरार है. फरवरी 2026 से ईरान, इजरायल और अमेरिका गुत्थमगुत्था हो रहे हैं. यह नई समस्या है. इस युद्ध का असर यह है कि पूरी दुनिया में कच्चा तेल और रसोई गैस के लिए हाहाकार मचा हुआ है. कुछ देशों में तो इसके दाम बेतहाशा बढ़े हैं. भारत में इस बीच करीब 4 रुपए ही कीमत बढ़ी है. पर, असर दिख तो दिख ही रहा है. पीएम नरेंद्र मोदी ने स्थिति और गंभीर होने की आशंका जताते हुए आगाह किया है. इस संकट में सर्वाइव करने के रास्ते तो तलाशने ही पड़ेंगे न. और, यह काम पीएम के अलावा दूसरा कोई कर भी नहीं सकता. इसके लिए तो हवाई करना मजबूरी और जरूरी है.

40 बिलियन डॉलर की डील

अब जरा इसे भी समझिए. इस महीने (मई 2026) पीएम मोदी 5 देशों की यात्रा पर निकले हैं. संयुक्त अरब अमीरात (वअए), नीदरलैंड्स, स्वीडन, नॉर्वे और इटली के दौरे में लगभग 40 बिलियन डॉलर (करीब 3.5 लाख करोड़ रुपये) के निवेश की डील हुई है. वअए से लंबे समय के लिए तेल और रसोई गैस सप्लाई का समझौता मौजूदा तेल संकट को टालने की दिशा में बड़ी डील मानी जा रही है. अरटछ और ळंइ के साथ सेमीकंडक्टर फैब, डिफेंस और अक में स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप, ग्रीन एनर्जी, टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और सप्लाई चेन डाइवर्सिफिकेशन जैसे समझौते भी पीएम ने इस बार की यात्रा में किए हैं. इससे आर्थिक विकास में मदद मिलने की उम्ममीद है तो सामरिक रणनीति की दृष्टि भी दिखती है.

सामरिक समझौते भी किए

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि अमेरिका से भारत के रिश्ते ठीक नहीं चल रहे. ट्रंप ने पहले भारतीय सामानों पर बेहिसाब टैरिफ लगाया. रूस से सस्ते तेल की खरीद रोकने का दबाव बनाया. सामरिक तौर पर भी भारत को मुसीबत में डालने करने का प्रयास ट्रंप ने शुरू कर दिया है. अब तक न्यूट्रल रहे भारत के बजाय इसके दुश्मन पाकिस्तान को उसने ईरान-इजरायल युद्ध में सरपंच बनाया. भारत के छोटे पड़ोसी देश तो कभी भी अमेरिका के आगे सरेंडर कर सकते हैं या जीत की जिद में बर्बाद हो सकते हैं. ऐसे में सामरिक तैयारी भी जरूरी है. इसके लिए रणनीतिक साझेदार तो तलाशने ही पड़ेंगे. पीएम की विदेश यात्रा इसलिए भी जरूरी थी.

8 साल यूपीएससी की तैयारी, फिर गुड़गांव में 18 हजार की नौकरी, महिला ने बताया सपना टूटने का दर्द क्या होता है?

(जीएनएस)।

UPSC एग्जाम निकल जाए, तो लाइफ सेट है! लेकिन इस एग्जाम का एक कड़वा सच यह भी है कि इसे जितने लोग पास नहीं करते, उससे ज्यादा लोग असफल होते हैं। मगर असफलता का मतलब, सिर्फ टूट जाना और हार जाना नहीं होता। 8 UPSC अटेंप्ट और 5 स्टेट सर्विस एग्जाम देने वाली महिला ने अपनी जर्नी बताई है।

एग्जाम कोई भी हो, UPSC, NET, GATE, NEET कोई भी! जब पूरा दिल और जान लगाकर की गई मेहनत के बाद भी रिजल्ट नहीं मिलता, तो तैयारी करने वाले का जो ब्रेकडाउन होता है नङ्ख वो रियल होता है। क्योंकि सालों की मेहनत का फल न मिलना किसी को भी दुखी कर सकता है, अंदर से तोड़ सकता है। लेकिन हमेशा जो चीज मायने रखती है, वह है कमबैक और बाउंसबैक करना।

मई 2026 में हुए UPSC प्रीलिम्स पेपर को काफी कठिन बताया जा रहा है। ऐसे में 8 साल UPSC की तैयारी करने वाली हरमिंदर कौर ने अपने कठिन सफर के बारे में बताया है। आंसू उनकी आंखों में भी है। लेकिन उनकी जर्नी कमबैक की है। वह बताती है कि किस तरह UPSC में सफल न हो पाने के बाद उन्होंने गुड़गांव में 18 हजार की नौकरी शुरू की और अब उनका जीवन कैसा है।

बहुत बुरा लगता है!

हरमिंदर ने 5 वीडियो की पूरी सीरीज बनाकर इंस्टाग्राम पर डाली है। वढरउ प्रीलिम्स एग्जाम 2026 देने वाले एस्पिरेंट्स से वह कहती है कि बहुत से बच्चे होंगे, जिनका ये लास्ट अटेंप्ट होगा और उनका नहीं हुआ होगा। उन्हें मैं बस इतना कहूंगी कि बहुत बुरा लगता है। 4-5 और कभी-कभी 8 सालों के लिए 14 घंटे लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ना, सोशल लाइफ जीरो करना। बहुत मुश्किल होता है।

इस UPSC अटेंप्ट के बाद जिन्होंने आगे बढ़ने का फैसला लिया है। उन्हें हरमिंदर कहती है कि 'बहुत मेहनत लगेगी यार, मूव ऑन करना बहुत टफ होता है, मन नहीं मानता। पर करना तो पड़ेगा न।' हरमिंदर कहती है कि पैरेंट्स की आंखों में सपने टूटते देखना, बहुत दुखी करता है। वो लोगों के ताने सुनना कि 'बच्चा दिल्ली गया था, क्या हुआ' सुनना तोड़ देता है।

8 अटेंप्ट के बाद गुड़गांव में 18 हजार की जॉब

8 साल तक UPSC की तैयारी करने और सारे अटेंप्ट देने के बाद भी हरमिंदर इस एग्जाम को क्रैक नहीं कर पाई। साथ ही, उन्होंने 5 बार स्टेस सिविल सर्विस का भी एग्जाम दिया। वह बताती है कि 'जब उनका नहीं हुआ तो वो निराश थी, फिर वो गुड़गांव आई और उन्होंने 18 हजार की नौकरी शुरू की।' हरमिंदर कहती है कि 'इतने महंगे शहर में 18 हजार रुपये कुछ नहीं होते। लेकिन मैंने यहां से शुरूआत की थी।'

हरमिंदर UPSC को लेकर अपनी आखिरी में बनाई रील में बताती है कि 'हमने जो UPSC को लेकर तैयारी की है, वो हमेशा हमारे काम आती है। फेल होकर ही यह पता लगता है कि शायद वो रास्ता ठीक नहीं था।

ऐसे में अब दूसरा रास्ता चुनना चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए। हार नहीं माननी है, आखिरी तक हार नहीं माननी है और मेहनत करने से कभी नहीं डरना है।'

UPSC नहीं आसान!

UPSC को भारत में 'मदर ऑफ ऑल एग्जाम्स' कहा जाता है।

इसमें सफलता मिलने की चांसेज परसेंटेज में 1 परसेंट से भी कम होती है।

हर साल लगभग 10 लाख से अधिक छात्र इस एग्जाम को देते हैं।

जिसमें 14-15 हजार ही मेन्स क्वालिफाई करते है और 2-3 हजार बच्चे इंटरव्यू तक पहुंचते हैं।

2-3 हजार में औसतन 800 से 1000 एस्पिरेंट्स का सेलेक्शन होता है।

इस एग्जाम को गंभीरता से लेने के बाद भी जो बच्चे इसे पास नहीं कर पाते, उनके लिए मूवऑन करना आसान नहीं होता।

क्योंकि उन्होंने अपने उम्र का सबसे प्राइम टाइम इसमें लगाया होता है। ऐसे में दिल आसानी से नहीं मानता। मगर 'मूवऑन' ही जीवन में आगे बढ़ने का एकमात्र जरिया होता है।

मिले तो शुक्र, न मिले तो सब्र

वढरउ एस्पिरेंट रही हरविंदर कौर की जर्नी ने हर किसी को भावुक कर दिया है। कमेंट सेक्शन में लोग उनका सफर सुनकर उन्हें मोटिवेट करने के लिए बेहतरीन प्रतिक्रिया दे रहे हैं। एक यूजर ने लिखा- मृत्य तक मिली सभी हार सिर्फ मनोवैज्ञानिक होती हैं। दूसरे यूजर ने कहा कि मिल जाए तो शुक्र, ना मिले तो सब्र। तीसरे यूजर का कमेंट था कि बहन, हिम्मत मत हारो! चौथे यूजर ने लिखा कि सफलता हमेशा सीधी लाइन में नहीं मिलती।

लखनऊ में डॉ. आंबेडकर महासभा और अस्थि कलश स्थल को न हटाने की मांग, सांसद चंद्रशेखर आजाद ने सीएम को लिखा पत्र

(जीएनएस)।

लखनऊ। नगीना से सांसद चंद्रशेखर आजाद ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर 10 विधानसभा मार्ग, लखनऊ स्थित बोधिसत्व बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर महासभा एवं अस्थि कलश स्थल को यथास्थिति में बनाए रखने और संरक्षित करने की मांग की है।

पत्र में कहा गया है कि यह स्थल बहुजन समाज की आस्था और श्रद्धा का प्रमुख केंद्र है। यहां डॉ. सविता आंबेडकर द्वारा बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर की अस्थियों का कलश स्थापित किया गया था।

इसके अलावा तत्कालीन राष्ट्रपति केआर नारायणन द्वारा बोधि वृक्ष का रोपण, पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा धम्म चक्र की स्थापना और पूर्व मुख्यमंत्री राजनाथ सिंह द्वारा 12 फीट ऊंची कांस्य प्रतिमा स्थापित की गई थी। पूर्व मुख्य न्यायाधीश केजी बालाकृष्णन, पूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भी इस स्थल पर श्रद्धांजलि दी जा चुकी है।

आरोप लगाया गया है कि 14 अप्रैल को एक कार्यक्रम के दौरान इस स्थल को हटाने की बात कही गई, जिससे समाज की भावनाएं आहत हो सकती हैं। सांसद ने आग्रह किया है कि इस ऐतिहासिक स्थल को सुरक्षित रखा जाए और इसकी यथास्थिति बरकरार रखी जाए।

यूपी स्टेट ताइक्वांडो टीम टैग चैंपियनशिप में साई लखनऊ बना ओवरऑल चैंपियन

(जीएनएस)।

लखनऊ। साई लखनऊ की टीम ने रविवार को आयोजित यूपी स्टेट ताइक्वांडो टीम टैग चैंपियनशिप में दमदार प्रदर्शन के साथ चार वर्गों में स्वर्णिम सफलता हासिल करते हुए टीम चैंपियनशिप अपने नाम कर ली। भारतीय खेल प्राधिकरण, क्षेत्रीय केंद्र, सरोजनीनगर, लखनऊ में उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो कमेटी द्वारा आयोजित चैंपियनशिप में बीच रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। टीम आधारित इस नए प्रारूप ने प्रतियोगिता

को और अधिक रोचक बना दिया, जहां खिलाड़ियों ने व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामूहिक रणनीति और तालमेल के दम पर जीत दर्ज की। समापन पर मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो कमेटी के चेयरमैन डॉ. रजत आदित्य दीक्षित एवं विशिष्ट अतिथि स्पोर्ट्स नेटवर्क इंडिया (एसएनआई) के निदेशक डॉ. आनंद किशोर पाण्डेय ने विजेता टीमों को पुरस्कृत किया। जूनियर मिक्स टीम वर्ग में साई लखनऊ की खुशी, नव्या, बृजेश और हर्षित की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। प्रतियोगिता के समापन पर बीकेटी के विधायक योगेश शुक्ला, ग्राम प्रधान लवकुश यादव एवं भुविका श्रीवास्तव ने विजेता और उपविजेता टीमों को ट्रॉफी व पुरस्कार दिए।

पटना में विधानसभा कर्मचारियों के लिए पिंक और ग्रीन इलेक्ट्रिक बस की सुविधा, आपके इलाके से गुजरेगा कौन सा रूट?

(जीएनएस)।

बिहार विधानसभा के अधिकारियों और कर्मचारियों को अब दफ्तर आने-जाने में बड़ी राहत मिलने वाली है। जल्द ही उनके लिए तीन अलग-अलग रूटों पर पिंक, ग्रीन और इलेक्ट्रिक बसों की सुविधा शुरू की जाएगी। इस फैसले पर शुक्रवार को विधानसभा अध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार और परिवहन मंत्री दामोदर रावत के बीच हुई अहम बैठक में सहमति बनी।

बढ़ती गर्मी, ट्रैफिक और ईंधन संकट को देखते हुए यह कदम काफी अहम माना जा रहा है। खास बात यह है कि पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए इलेक्ट्रिक बसों को भी इस योजना में शामिल किया गया है। इससे कर्मचारियों को सस्ती, सुरक्षित और समय पर यात्रा की सुविधा मिल सकेगी। बैठक में बसों के रूट, संचालन और कर्मचारियों की जरूरतों पर विस्तार से चर्चा हुई।

ऊर्जा संकट को देखते हुए लिया गया फैसला

विधानसभा अध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार ने वैश्विक ऊर्जा संकट और बढ़ते ईंधन खर्च का जिक्र करते हुए अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए बस सुविधा शुरू करने का आग्रह किया था। इसके बाद परिवहन मंत्री दामोदर रावत ने बस परिचालन के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी।

बिहार विधानसभा अध्यक्ष डॉ. प्रेम कुमार ने कहा, "वर्तमान वैश्विक

ऊर्जा संकट को देखते हुए, जहां हर प्रकार के वाहन लगातार सड़कों पर चल रहे हैं, और प्रधानमंत्री द्वारा पेट्रोल-डीजल की खपत कम करने तथा सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने की अपील के मद्देनजर, बिहार विधान सभा आज पिंक और ग्रीन बस सेवा शुरू कर रही है। यह सेवा विधानसभा के अधिकारियों और कर्मचारियों को उनके घर से कार्यालय आने-जाने में सुविधा देने के उद्देश्य से शुरू की जा रही है॥"

पहले से चल रही हैं इलेक्ट्रिक और पिंक बसें

बैठक में परिवहन सचिव राज कुमार ने जानकारी दी कि फिलहाल सचिवालय कर्मचारियों के लिए विभाग की ओर से अलग-अलग रूटों पर छह इलेक्ट्रिक और पांच पिंक बसों का संचालन किया जा रहा है। इन बसों का इस्तेमाल अब विधानसभा सचिवालय के कर्मचारी भी कर सकेंगे।

तीन रूटों पर चलेंगी बसें

विधानसभा सचिवालय की ओर से तीन अलग-अलग रूटों का प्रस्ताव दिया गया है।

-पहला रूट

एम्स पटना से फुलवारीशरीफ, अनीसाबाद, चितकोहरा, कच्ची तालाब, गर्दनीबाग और मीठापुर होते हुए बिहार विधान मंडल सचिवालय तक बसें चलेंगी।

-दूसरा रूट

सगुना मोड़ से आरपीएस, गोला रोड, जगदेव पथ, आशियाना मोड़, रामनगरी, राजीवनगर थाना, राजवंशी नगर और शास्त्री नगर होते हुए बिहार विधान मंडल सचिवालय तक बस सेवा दी जाएगी।

-तीसरा रूट

धनकी मोड़ से कुम्हरार, भूतनाथ मोड़, एनएमसीएच, राजेंद्र नगर टर्मिनल, कंकड़बाग कॉलोनी मोड़, करबिगहिया और आर ब्लॉक होते हुए बिहार विधान मंडल, निर्वाचन आयोग और विकास भवन तक बसें जाएंगी।

बैठक में कई अधिकारी रहे मौजूद

इस बैठक में विधानसभा के उपाध्यक्ष नरेंद्र नारायण यादव और बिहार राज्य पथ परिवहन निगम के प्रशासक अतुल वर्मा समेत कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। बस सेवा शुरू होने के बाद बड़ी संख्या में कर्मचारियों को रोजाना आने-जाने में सुविधा मिलने की उम्मीद है।

काकरोच जनता पार्टी का अगला मिशन क्या? 2.2 करोड़ युवाओं के सपोर्ट के बाद सीजेपी ने खोले अपने बड़े राज

(जीएनएस)।

भारत की समकालीन राजनीति और डिजिटल स्पेस में इन दिनों एक बेहद अजीबोगरीब और अभूतपूर्व आंदोलन ने तूफान ला दिया है। सोशल मीडिया पर महज एक मजाक और व्यंग्य के रूप में शुरू हुई 'कॉकरोच जनता पार्टी' (CJP) अब देश के करोड़ों युवाओं की हताशा, बेरोजगारी और सिस्टम के खिलाफ गुस्से का एक बड़ा वैश्विक मंच बन चुकी है।

इंस्टाग्राम पर देखते ही देखते 2.2 करोड़ से अधिक फॉलोअर्स का आंकड़ा पार करने वाली इस वर्चुअल पार्टी ने अब अपने भविष्य के रोडमैप का खाका देश के सामने रखा है।

इस 'सटायर मूवमेंट' के संस्थापक और पॉलिटिकल कम्युनिकेशन स्ट्रैटेजिस्ट अभिजीत डिपके ने साफ कर दिया है कि उनका मकसद युवाओं की आवाज को एक संगठित आंदोलन में बदलना है।

क्यों और कैसे हुआ 'कॉकरोच जनता पार्टी' का जन्म?

दरअसल, यह पूरा विवाद उस समय शुरू हुआ जब सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान उखक सूर्यकांत की एक टिप्पणी में कुछ युवाओं की तुलना 'कॉकरोच' से किए जाने का मुद्दा सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। इसी के जवाब में एक इंस्टाग्राम पेज बनाया गया, जिसने देखते ही देखते करोड़ों युवाओं का समर्थन जुटा लिया।

अब यह पेज सोशल मीडिया पर 2.28 करोड़ से ज्यादा फॉलोअर्स के साथ एक बड़े डिजिटल कैंपेन में बदल चुका है। ऐसे में सबसे बड़ा

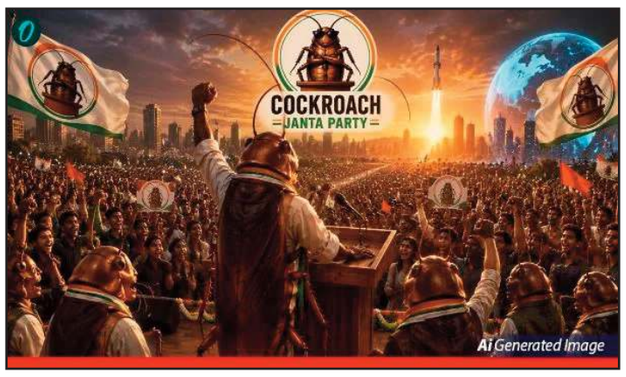

सवाल यही था कि आखिर आगे क्या? क्या यह सिर्फ एक वायरल ट्रेंड बनकर खत्म हो जाएगा या फिर राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर कोई बड़ा आंदोलन बनेगा? अब खुद CJP ने इस पर अपनी रणनीति साफ कर दी है।

CJP का भविष्य का एजेंडाः क्या है अगला कदम?

सीजेपी ने अपनी नई इंस्टाग्राम पोस्ट में साफ किया कि वे देश के महापुरुषों-महात्मा गांधी, डॉ. बी.आर. आंबेडकर, जवाहरलाल नेहरू, शहीद भगत सिंह और नेताजी सुभाष चंद्र बोस के सिद्धांतों से प्रेरणा लेते हैं। उनके मुख्य संकल्प में कहा गया है-

संविधान और सामाजिक न्यायः पाटीर्बाजी से दूर रचनात्मक मुद्देः यह आंदोलन पूरी तरह से भारतीय संविधान के मूल्यों, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय पर आधारित होगा।

पाटीर्बाजी से दूर रचनात्मक मुद्देः सीजेपी किसी भी मुख्यधारा की राजनीतिक पार्टी का हिस्सा नहीं बनेगी और न ही किसी दलगत राजनीति में फंसेगी। इसका पूरा ध्यान शिक्षा, रोजगार, पर्यावरण और संस्थागत पारदर्शिता पर रहेगा।

2.2 करोड़ युवाओं से सुझाव की अपीलः सीजेपी ने अपने विशाल समुदाय से देश को बेहतर बनाने और युवाओं की समस्याओं को हल करने के लिए सुझाव मांगे हैं। अगले कुछ दिनों में इन सुझावों को कंपाइल करके बड़े जमीनी और डिजिटल अभियान शुरू किए जाएंगे। पोस्ट में लिखा गया, "कॉकरोच अंधेरे कोनों में भी जीवित रहने और हर दमनकारी कोशिश के बाद भी टिके रहने के लिए जाने जाते हैं। इस देश का युवा भी आज ऐसा ही महसूस कर रहा है-उपेक्षित और प्रताड़ित, लेकिन हार न मानने वाला।"

सबसे बड़ा सवाल- क्या राजनीतिक पार्टी बनेगी CJP?

अपने पोस्ट में CJP ने साफ किया कि उनका उद्देश्य पारंपरिक राजनीति में उतरना नहीं, बल्कि युवाओं की समस्याओं को मजबूती से उठाना है। उन्होंने कहा कि उनका आंदोलन संविधान के मूल्यों पर आधारित रहेगा। पोस्ट में गांधी, बाबा साहेब आंबेडकर, जवाहरलाल नेहरू, भगत सिंह और नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जिक्र करते हुए कहा गया कि वे धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों में विश्वास रखते हैं।

CJP ने कहा-हमारी सोच साफ है देश के युवाओं को शिक्षा, रोजगार, पर्यावरण और संस्थागत पारदर्शिता के मामले में बेहतर व्यवस्था मिलनी चाहिए। हम इन मुद्दों को रचनात्मक तरीके से उठाएंगे, बिना किसी दलगत राजनीति में फंसे।"

2 करोड़ युवाओं से मांगे सुझाव

CJP ने कहा कि अगले कुछ दिनों में वे अपने 22 मिलियन से ज्यादा समर्थकों से सुझाव लेंगे और सबसे अच्छे आइडियाज को कैंपेन में बदलेंगे।

इसके बाद संगठित और सामूहिक कार्रवाई की दिशा में काम किया जाएगा।

सीएम योगी का जनता दर्शनः गर्मी को लेकर विशेष दिशा-निर्देश जारी, तय समय पर समस्या हल करने के दिए आदेश

(जीएनएस)।

लखनऊ, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को 'जनता दर्शन' में प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आए फरियादियों से मिलकर सभी की समस्याएं सुनीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेशवासियों की सुरक्षा, सम्मान पर सरकार का पूरा जोर है। सरकार जनसमस्याओं के उचित समाधान के लिए प्रतिबद्ध भी है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को तय समय सीमा के भीतर समस्याओं के निस्तारण का भी निर्देश दिया।

बिना भेदभाव सभी को मिले न्याय

मुख्यमंत्री ने कहा कि हर जरूरतमंद की समस्या का समाधान हमारी सरकार की प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री ने अफसरों को निर्देशित किया कि पूरी संवेदनशीलता से सुनिश्चित करें कि बिना भेदभाव सभी को न्याय मिले। हर पात्र को योजनाओं का लाभ मिले, जरूरतमंदों के समुचित इलाज की व्यवस्था हो। मुख्यमंत्री ने राजस्व और कानून व्यवस्था से जुड़े मामलों के भी शीघ्रता से निस्तारण के निर्देश दिए।

महिलाओं से बोले मुख्यमंत्री-गर्मी में अपना और परिवार का विशेष ध्यान रखिए

मुख्यमंत्री ने 'जनता दर्शन' में आईं महिलाओं की समस्याएं सुनीं, उनका हालचाल जाना, फिर उनसे संवाद भी किया। उन्होंने महिलाओं से कहा कि गर्मी बहुत पड़ रही है। ऐसे में अपना और परिवार के बुजुर्गों, बच्चों, पुरुषों का ध्यान रखें। इस समय अकारण बाहर निकलने से बचें और खानपान पर विशेष ध्यान दें।

'पुराने पेपर लीक से सबक क्यों नहीं लिया?', नीट मामले में सुप्रीमकोर्ट सख्त, केंद्र-एनटीए को नोटिस भेज मांगा जवाब

(जीएनएस)।

देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा NEET-UG 2026 एक बार फिर विवादों के घेरे में आ गई है। पेपर लीक के आरोपों के बाद मामला अब सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच चुका है, जहां सोमवार को हुई सुनवाई के दौरान अदालत ने काफी सख्त टिप्पणी की। कोर्ट ने कहा कि यह बेहद दुखद स्थिति है कि परीक्षा पेपर लीक के पहले सामने आ चुके मामलों से अब तक कोई ठोस सबक नहीं लिया गया।

सुप्रीम कोर्ट की इस टिप्पणी ने एक बार फिर नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (NTA) की कार्यप्रणाली पर बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं। लाखों छात्रों के भविष्य से जुड़ी इस परीक्षा में लगातार सामने आ रही गड़बड़ियों ने छात्रों और अभिभावकों दोनों की चिंता बढ़ा दी है। इसी बीच अदालत ने केंद्र सरकार और शिक्षा मंत्रालय को नोटिस जारी करते हुए पूरे मामले पर जवाब मांगा है।

सुप्रीम कोर्ट ने जताई नाराजगी

सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने साफ कहा कि देश में लगातार पेपर लीक की घटनाएं सामने आने के बावजूद परीक्षा व्यवस्था में कोई बड़ा सुधार दिखाई नहीं दे रहा है। अदालत ने इस बात पर भी चिंता जताई कि इतनी संवेदनशील परीक्षाओं में सुरक्षा को लेकर अब तक मजबूत इंतजाम क्यों नहीं किए जा सके।

कोर्ट ने NTA से यह भी पूछा कि उस मॉनिटरिंग कमेटी का क्या हुआ, जिसे पहले दिए गए अदालत के आदेशों के बाद बनाया जाना था। अदालत ने संकेत दिए कि अगर व्यवस्था में सुधार नहीं हुआ तो भविष्य में और सख्त कदम उठाए जा सकते हैं।

SC ने भेजा केंद्र और शिक्षा मंत्रालय को नोटिस

सुप्रीम कोर्ट ने NEET-UG 2026 पेपर लीक मामले में दायर याचिकाओं पर केंद्र सरकार और शिक्षा मंत्रालय को नोटिस जारी किया है। अदालत ने दोनों पक्षों से पूरे मामले पर विस्तृत जवाब मांगा है ताकि परीक्षा प्रक्रिया में हुई कथित गड़बड़ियों की सही तस्वीर सामने आ सके।

इसके साथ ही कोर्ट ने NTA को भी जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। अदालत जानना चाहती है कि परीक्षा की सुरक्षा व्यवस्था में आखिर कहां चूक हुई और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं।

FAIMA पहुंची सुप्रीम कोर्ट

फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया मेडिकल एसोसिएशन (FAIMA) ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर याचिका में दावा किया गया कि NEET-UG 2026 के आयोजन में सिस्टम स्तर पर बड़ी विफलता देखने को मिली। इसी वजह से लाखों छात्रों के भविष्य पर अनिश्चितता का माहौल बन गया है और दोबारा निष्पक्ष परीक्षा कराना जरूरी हो गया है।

NTA को हटाने की मांग

याचिका में मांग की गई है कि NTA को हटाया जाए या फिर उसका पूरी तरह से पुनर्गठन किया जाए ताकि परीक्षा प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और सुरक्षित बनाया जा सके। इसके साथ ही न्यायिक निगरानी में NEET-UG 2026 की नई परीक्षा कराने की मांग भी रखी गई है।

याचिकाकताओं ने अदालत से कहा कि मेडिकल प्रवेश परीक्षा का जिम्मा ऐसी संस्था को दिया जाना चाहिए जो तकनीकी रूप से मजबूत हो और पूरी तरह स्वतंत्र तरीके से काम करे। उनका कहना है कि मौजूदा व्यवस्था छात्रों का भरोसा जीतने में असफल रही है।

हाई लेवल कमेटी बनाने की मांग

याचिका में यह भी कहा गया है कि जब तक कोई नई और स्वतंत्र परीक्षा संस्था नहीं बनती, तब तक NEET-UG 2026 की दोबारा परीक्षा की निगरानी के लिए एक हाई लेवल कमेटी बनाई जाए। इस समिति की अध्यक्षता सुप्रीम Court के रिटायर्ड जज को देने की मांग की गई है।

इसके अलावा समिति में साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ और फोरेंसिक साइंटिस्ट को शामिल करने की बात कही गई है। याचिकाकताओं का मानना है कि तकनीकी विशेषज्ञों की मौजूदगी से परीक्षा प्रक्रिया को ज्यादा सुरक्षित और पारदर्शी बनाया जा सकेगा।

CBI कर रही जांच

जानकारी के मुताबिक, NTA द्वारा 3 मई को आयोजित NEET-UG 2026 परीक्षा रद्द किए जाने के कुछ दिनों बाद यह याचिका सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की गई। पेपर लीक के आरोप सामने आने के बाद मामले ने राष्ट्रीय स्तर पर बड़ा विवाद खड़ा कर दिया था।

केंद्र सरकार पहले ही इस पूरे मामले की जांच उइक को सौंप चुकी है। जांच एजेंसी अब पेपर लीक से जुड़े सभी पहलुओं की जांच कर रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि परीक्षा में गड़बड़ी किस स्तर पर हुई और इसके पीछे कौन लोग शामिल थे।

कश्मीर की वादियों से वायरल हुआ पप्पू यादव का फिल्मी अंदाज, वीडियो देख लोग बोले- 'घोड़े पर तो रहम करो नेताजी!'

(जीएनएस)।

पूर्णिया सांसद पप्पू यादव एक बार फिर सोशल मीडिया पर चर्चा में हैं। इस बार वजह कोई राजनीतिक बयान नहीं, बल्कि कश्मीर की खूबसूरत वादियों में की गई उनकी घुड़सवारी है। इंटरनेट पर वायरल हो रहे एक वीडियो में पप्पू यादव बर्फ से ढके पहाड़ों और हरियाली के बीच घोड़े पर सवारी करते नजर आ रहे हैं।

वीडियो सामने आते ही सोशल मीडिया यूजर्स ने इसे लेकर मजेदार मीम्स और टिप्पणियां करनी शुरू कर दीं। कुछ लोग उनके अंदाज को फिल्मी बता रहे हैं, तो कई यूजर्स घोड़े की हालत को लेकर मजाक कर रहे हैं। यही वजह है कि यह वीडियो तेजी से वायरल हो गया और एक्स से लेकर दूसरे प्लेटफॉर्म तक इसकी खूब चर्चा हो रही है।

गुलमर्ग की वादियों में दिखे पप्पू यादव

वायरल वीडियो में पप्पू यादव कश्मीर के मशहूर पर्यटन स्थल गुलमर्ग की खूबसूरत वादियों में घूमते दिखाई दे रहे हैं। चारों तरफ बर्फ से ढके पहाड़ और शांत माहौल नजर आ रहा है। वीडियो में वह आराम से घोड़े पर बैठे हुए आसपास के नजारों का आनंद लेते दिखते हैं।

पप्पू यादव ने खुद भी इस वीडियो को सोशल मीडिया पर शेयर किया। उन्होंने पोस्ट में लिखा, "गुलमर्ग गोंडोला (जम्मू और कश्मीर)" उनके इस पोस्ट पर समर्थकों और आम यूजर्स दोनों की प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं।

घोड़े को लेकर शुरू हुए मीम्स

वीडियो वायरल होने के बाद लोगों का ध्यान पप्पू यादव से ज्यादा उस घोड़े पर चला गया, जिस पर वह सवारी कर रहे थे। कई यूजर्स ने घोड़े की हालत को लेकर मजेदार कमेंट किए। एक यूजर ने लिखा कि नेताजी राजनीति का बोझ उठाते-उठाते अब घोड़े पर भी पूरा भार डाल रहे हैं। वहीं दूसरे यूजर ने मजाक में कहा कि घोड़ा भी शायद अपने पुराने दिनों को याद कर रहा होगा। कई लोगों ने घोड़े को "डेमोक्रेसी एक्सप्रेस" और "जन सेवा वाहक" जैसे नाम भी दे डाले।

एक्स पर पोस्ट ने खींचा ध्यान

यह वीडियो एक्स पर @Mrsanjaysengar नाम के अकाउंट से भी शेयर किया गया। पोस्ट में मजाकिया अंदाज में लिखा गया कि पप्पू यादव इन दिनों ऐसे घूम रहे हैं जैसे किसी फिल्म की शूटिंग चल रही हो। साथ ही घोड़े को लेकर कई व्यंग्य भरी बातें भी लिखी गईं।

पप्पू यादव जी इन दिनों ठंडी वादियों में ऐसे घूम रहे हैं जैसे किसी फिल्म की शूटिंग चल रही हो।

लेकिन जनता की नजर घोड़े पर अटक गई।

बेचारा घोड़ा भी शायद मन ही मन सोच रहा होगा!!

हे मालिक!

राजनीति का बोझ अलग था, अब शरीर का भी उठा रहे हैं!

पोस्ट में कहा गया कि जनता की नजर नेताजी से ज्यादा घोड़े पर टिक गई है और लोग अब घोड़े की कमर सलामत रहने की दुआ कर रहे हैं। यही पोस्ट वायरल होने के बाद सोशल मीडिया पर मीम्स की बाढ़ आ गई।

लोगों ने किए मजेदार कमेंट

वीडियो पर सोशल मीडिया यूजर्स लगातार मजेदार प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। एक यूजर ने लिखा कि स्वर्ग घूमने से पहले घोड़े का भी ख्याल कर लेना चाहिए था। दूसरे ने कहा कि घोड़ा शायद अपने पूर्वजों को याद कर रहा होगा।

कुछ लोगों ने यह भी लिखा कि नेताजी जनता का बोझ उठाने की बात करते हैं, लेकिन यहां पूरा राजनीतिक भार घोड़ा उठा रहा है। वहीं कई यूजर्स ने हंसते हुए कहा कि थोड़ा उतर जाइए, घोड़े पर ज्यादा बोझ पड़ रहा है।

कश्मीर की खूबसूरती ने भी जीता दिल

हालांकि वीडियो में सिर्फ मजाक ही नहीं, बल्कि कश्मीर की खूबसूरती की भी खूब चर्चा हो रही है। कई यूजर्स ने गुलमर्ग के शानदार नजारों की तारीफ की। वीडियो में बर्फीले पहाड़, ठंडी वादियां और हरियाली लोगों को आकर्षित कर रही है।

गुलमर्ग देश के सबसे पसंदीदा पर्यटन स्थलों में गिना जाता है। हर साल यहां बड़ी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं। सर्दियों में बर्फबारी और स्कीइंग का रोमांच लोगों को खींचता है, जबकि गर्मियों में यहां का मौसम और हरियाली लोगों को पसंद आती है।

घुड़सवारी करते दिखे उत्साहित

वीडियो में पप्पू यादव काफी खुश और उत्साहित नजर आए। वह पारंपरिक पहाड़ी माहौल का आनंद लेते दिखे। घोड़े पर बैठकर वह आसपास के नजारों को देखते रहे और कैमरे की तरफ मुस्कुराते भी दिखाई दिए। सोशल मीडिया पर यह वीडियो लगातार शेयर किया जा रहा है और लोग अपने-अपने अंदाज में इस पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं।